Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 147 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, गुरुवार 28 नवम्बर 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

जहां सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अचौर्य, ब्रम्हाचर्य है वहां धर्म है।

Where there are truth, nonviolence, non-possession, non-stealing and celibacy, there is religion.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

246 पदों पर भर्ती के लिए पीएससी ने जारी किया नोटिफिकेशन

रायपुर (विसं)। छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग द्वारा 246 पदों पर भर्ती हेतु नोटिफिकेशन जारी कर दिया गया है। अधिसूचना के मुताबिक राज्य पुलिस सेवा सहायक संचालक, डिप्टी कलेक्टर, जेल अधीक्षक, राज्य वित्त सेवा अधिकारी जैसे 17 अलग-अलग विभाग के पद शामिल हैं। छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग सीजीपीएससी का फॉर्म 1 दिसंबर 2024 से शुरू होकर 31 दिसंबर 2024 तक चलेगा। इस संबंध में विभागीय नोटिफिकेशन आज 26 नवंबर 2024 को जारी किया गया है। बता दें छत्तीसगढ़ राज्य सेवा परीक्षा 246 पदों पर भर्ती हेतु ऑनलाइन आवेदन एक दिसंबर 2024 से शुरू हो जाएगा।

जिले में आज 12,303 टन धान की हुई खरीदी

रायपुर (विसं)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के निर्देश में जिले के किसानों को समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी की जा रही है। जिले में आज 12 हजार 303 टन धान की खरीदी की गई। जिले में अब तक 139 उपार्जन केन्द्रों में 22 हजार 437 किसानों से 93 हजार 626 टन धान की खरीदी हुई है। इन किसानो से 215 करोड़ 52 लाख रूपये की धान की खरीदी की गई है। मुख्यमंत्री के निर्देश पर धान केन्द्रों में किसानों को आवश्यक सुविधाएं भी प्रदान की जा रही है। जिससे किसानों में धान बेचने को लेकर उत्साह है।

हंगामे के कारण राज्यसभा की कार्यवाही गुरुवार तक स्थगित

विपक्षी सांसदों ने नियम 267 के तहत मणिपुर और संभल हिंसा जैसे मुद्दों पर चर्चा की मांग की

नई दिल्ली (आरएनएस)। राज्यसभा में बुधवार को सदन की कार्यवाही प्रारंभ होने के कुछ देर बाद ही विपक्षी सांसदों ने नियम 267 के तहत मणिपुर और संभल हिंसा जैसे मुद्दों पर चर्चा की मांग की। सभापति ने इस मांग को अस्वीकार कर दिया। इसके कारण कई विपक्षी सांसद सदन में हंगामा करने लगे और सदन की कार्यवाही प्रारंभ होने के कुछ देर बाद ही स्थगित करनी पड़ी। संसद की कार्यवाही दोबारा प्रारंभ होने पर भी यह हंगामा नहीं रुका और राज्यसभा को पूरे दिन के लिए स्थगित कर दिया गया।

दरअसल बुधवार को राज्यसभा में आम आदमी पार्टी के एक सांसद ने नोटिस देकर सभापति को बताया कि वह दिल्ली की कानून व्यवस्था और राष्ट्रीय राजधानी में बढ़ते अपराधों पर चर्चा चाहते हैं। वहीं सुष्मिता देव, राघव चड्ढा, तिरुची शिवा, संतोष कुमार पी जैसे विपक्षी सांसदों ने मणिपुर हिंसा को लेकर चर्चा की मांग की। डॉ जॉन बिटास, ए ए रहीम, प्रोफेसर रामगोपाल यादव और अब्दुल वहाब ने उत्तर प्रदेश के संभल में हुई हिंसा और उसके बाद उत्पन्न स्थिति पर चर्चा की मांग की।

विपक्ष के ये सांसद चाहते थे कि सदन के अन्य कार्यों को स्थगित करके इन विषयों पर चर्चा कराई जाए। विपक्षी सांसद नियम 267 के तहत चर्चा की मांग कर रहे थे। हालांकि सभापति जगदीप धनखड़ ने सांसदों की इस मांग को अस्वीकार कर दिया। इसके बाद विपक्षी सांसदों ने सदन में हंगामा शुरू कर दिया और इसके चलते सदन की कार्यवाही 11 बजकर 30 मिनट तक के लिए स्थगित करनी पड़ी।

सदन की कार्यवाही दोबारा प्रारंभ होने पर कांग्रेस के प्रमोद तिवारी समेत कई विपक्षी सांसद चर्चा की मांग को लेकर अपने स्थान पर खड़े हो गए। इसके बाद अधिकांश विपक्षी सांसद इस मुद्दे को लेकर अपनी आवाज उठाने लगे। सभापति ने सांसदों से अपने स्थान पर जाकर बैठने का आग्रह किया। लेकिन विपक्षी सांसदों का यह विरोध लगातार बढ़ता रहा। इसको देखते हुए सभापति ने राज्यसभा की कार्यवाही गुरुवार तक के लिए स्थगित कर दी।

इससे पहले जब सोमवार को संसद का शीतकालीन सत्र प्रारंभ हुआ था तब भी राज्यसभा में विपक्षी सांसद मणिपुर हिंसा व संभल हिंसा के मुद्दों पर चर्चा की मांग करते दिखे थे। मणिपुर और उत्तर प्रदेश के संभल में हिंसा के मुद्दे पर चर्चा के लिए कई विपक्षी सांसदों ने बुधवार को भी राज्यसभा के सभापति को नोटिस दिया था। सभापति ने सांसदों की इस मांग को अस्वीकृत कर दिया। राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने कहा कि वह पहले भी नियम 267 के तहत चर्चा पर अपना निर्णय दे चुके हैं, वही निर्णय वह दोबारा दोहरा रहे हैं।

केंद्र ने 15 राज्यों में आपदा न्यूनीकरण परियोजनाओं के लिए 1,000 करोड़ रुपए के खर्च को दी मंजूरी

नई दिल्ली (आरएनएस)। केंद्र सरकार ने 15 राज्यों में प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए आपदा न्यूनीकरण और क्षमता निर्माण परियोजनाओं के लिए 1,000 करोड़ रुपये के खर्च को मंजूरी दी है। एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी गई।

उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के लिए 139-139 करोड़ रुपये, महाराष्ट्र के लिए 100 करोड़ रुपये, कर्नाटक और केरल के लिए 72-72 करोड़ रुपये, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल के लिए 50-50 करोड़ रुपये और पूर्वोत्तर के आठ राज्यों असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा के लिए 378 करोड़ रुपये की राशि मंजूर की गई। यह निर्णय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता वाली एक उच्च स्तरीय समिति द्वारा लिया गया, जिसमें केंद्रीय वित्त और कृषि मंत्री और नीति आयोग के उपाध्यक्ष सदस्य थे। उन्होंने राष्ट्रीय आपदा न्यूनीकरण कोष (एनडीएमएफ) से फंडिंग के लिए 15 राज्यों में भूस्खलन के जोखिम को कम करने के प्रस्ताव पर विचार किया। समिति ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों के प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण के लिए 115.67 करोड़ रुपये की कुल लागत वाली एक परियोजना को भी हरी झंडी दिखाई। परियोजना के खर्च के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया कोष (एनडीआरएफ) की फंडिंग विंडो का उपयोग किया जाएगा।

इससे पहले, समिति ने एनडीएमएफ से 3,075.65 करोड़ रुपये की कुल लागत वाली सात शहरों में शहरी बाढ़ जोखिम न्यूनीकरण परियोजनाओं और चार राज्यों में ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड (जीएलओएफ) जोखिम प्रबंधन परियोजनाओं को मंजूरी दी थी।

'हमारे बीच कोई मतभेद नहीं, प्रधानमंत्री जो फैसला लेंगे वो मंजूर'

मुख्यमंत्री पद को लेकर एकनाथ शिंदे बोले

मुंबई (आरएनएस)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों के नतीजे के बाद एकनाथ शिंदे ने पहली बार प्रेस कॉन्फ्रेंस की. इस दौरान शिंदे ने कई बड़े बयान दिए हैं. विधानसभा चुनाव में महायुति ने भारी बहुमत से जीत दर्ज की है. प्रदेश के 288 सीटों में से 235 सीटों पर महायुति ने जीत दर्ज की. इस जीत के बाद से सबसे पहला सवाल यही उठ रहा है कि आखिर अगला सीएम कौन होगा?

सूत्रों की मानें तो देवेंद्र फडणवीस के नाम पर मुहर लग चुकी है. आज शाम को इसकी आधिकारिक घोषणा हो जाएगी. इस बीच महायुति के तीनों नेताओं को दिल्ली बुलाया गया है. देवेंद्र फडणवीस, अजित पवार और एकनाथ शिंदे दिल्ली पहुंचने वाले हैं. पीसी करते हुए शिंदे ने जनता को जीत के लिए धन्यवाद दिया. जिन कामों को एमवीए ने रोक दिया था, उसे हमने शुरू किया. हम कई कल्याणकारी योजना लोगों के लिए लेकर आए. इसलिए लोगों का हमें साथ भी लिया. हम लोग सुबह 5 बजे से ही चुनाव के लिए काम कर रहे थे. हमने करीब-करीब 100 सभाएं की. इस चुनाव में हमारे सभी कार्यकर्ताओं ने बहुत मेहनत की. मैंने अपने आप को कभी भी सीएम नहीं समझा, हमेशा आम आदमी की तरह ही काम किया.

सरकार लोगों के लिए काम करती है. हमने लोगों के लिए काम किया. हमने लाडली बहन योजना शुरू किया. हमें अमित शाह का पूरा सपोर्ट मिला. वह चट्टान की तरह हमारे पीछे खड़े रहे. उन्होंने कहा कि आप जनता के लिए काम कीजिए. हम आपके साथ हैं. उन्होंने मेरे जैसे आम इंसान को सीएम बनाया और इतनी बड़ी जिम्मेदारी दी. मोदी जी और शाह साहेब हमेशा मेरे साथ रहे. मैंने हमेशा जनता के लिए ही काम किया. किसी भी सरकार ने इतने सारे निर्णय नहीं लिए. महाविकास अघाड़ी के शासनकाल में किसान परेशान थे, आम लोग परेशान थे. हमने सबके लिए काम किया. हमने राज्य को पहले स्थान पर पहुंचाया. हमें लाडली बहनों का बहुत प्यार मिला, मैं लाडली बहनों का लाडला भाई हूं.

गौतम अडाणी को लेकर संसद में विपक्ष का हंगामा, राहुल ने की गिरफ्तारी की मांग

नई दिल्ली (आरएनएस)। लोकसभा में बुधवार अडाणी समूह के प्रमुख गौतम अडाणी पर अमेरिका में लगे रिश्वतखोरी के आरोपों और उत्तर प्रदेश के संभल में हुई हिंसा को लेकर विपक्ष ने जोरदार हंगामा किया। इस दौरान विपक्षी सांसदों ने जमकर नारेबाजी भी की। इसके चलते पहले तो 12 बजे तक लोकसभा की कार्यवाही स्थगित की गई, लेकिन बाद में हंगामा जारी रहने पर उसे दिनभर के लिए स्थगित कर दिया। इधर, नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने अडाणी की गिरफ्तारी की मांग की है।

राहुल गांधी ने संसद परिसर में मीडिया से कहा कि क्या आपको लगता है कि अडाणी आरोपों को स्वीकार करने जा रहे हैं? जाहिर है, वे आरोपों से इनकार करने जा रहे हैं। मुद्दा यह है कि उन्हें गिरफ्तार किया जाना चाहिए। सैकड़ों लोगों को छोटे-छोटे आरोपों में गिरफ्तार किया जा रहा है।राहुल ने मामले में आगे कहा, सज्जन पर अमेरिका में हजारों करोड़ रुपये का आरोप है। उन्हें तो जेल में होना चाहिए, लेकिन सरकार उन्हें बचा रही है।

अमेरिका के सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज कमीशन ने अडाणी समूह पर अमेरिका की बिजली वितरण कंपनियों के साथ सौर ऊर्जा अनुबंध हासिल करने के लिए भारतीय अधिकारियों को कथित तौर पर 2,000 करोड़ रुपये रिश्वत देने का आरोप लगाया है।दावा है कि ये बात अमेरिकी बैंकों और निवेशकों से छिपाई गई।

अडाणी समूह को अनुबंध मिलने से करीब 16,000 करोड़ रुपये के लाभ की उम्मीद थी। अमेरिकी कोर्ट ने अडाणी और उनके भतीजे सागर समेत 8 को आरोपी बनाया है।

आंध्र प्रदेश के डिप्टी सीएम पवन कल्याण ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से की मुलाकात

नई दिल्ली (आरएनएस)। जन सेना पार्टी (जेएसपी) प्रमुख और आंध्र प्रदेश के उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण ने बुधवार को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की।

हालांकि, पीएम नरेंद्र मोदी और पवन कल्याण के बीच किन मुद्दों पर बातचीत हुई है इसकी जानकारी सामने नहीं आई है। पीएम मोदी से मुलाकात की जानकारी पवन कल्याण ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट के माध्यम से दी। उन्होंने पीएम मोदी के साथ मुलाकात की अपनी तस्वीर भी पोस्ट की है।

जेएसपी नेता ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभारी हूं कि उन्होंने व्यस्त संसद सत्र के बीच अपना बहुमूल्य समय दिया। गांधीनगर में मेरी पहली मुलाकात से लेकर इस मुलाकात तक, यह हमेशा गर्मजोशी से भरी रही। मैं हमेशा उनके प्रति प्रशंसा के साथ मीटिंग से निकलता हूं और भारत के लिए उनकी प्रतिबद्धता और प्रेम वास्तव में प्रेरणादायक है।

पीएम मोदी से पहले पवन कल्याण ने भाजपा के वरिष्ठ नेता और लोकसभा सांसद भूपेंद्र यादव के साथ बैठक की थी। इसकी जानकारी भी उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट कर दी थी। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, आज सुबह, पवन कल्याण ने केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव के साथ बैठक की थी। इस बैठक में उन्होंने लाल चंदन (रेड सैंडर्स) संरक्षण के मुद्दे पर चर्चा की थी।

बता दें कि उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण राष्ट्रीय राजधानी के अपने दो दिवसीय दौरे के पहले दिन (मंगलवार को) नई दिल्ली में काफी व्यस्त रहे। उन्होंने मंगलवार को केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण समेत कई केंद्रीय मंत्रियों के साथ कई बैठकें की थीं।

इजरायल-लेबनान युद्धविराम समझौते से क्षेत्र में व्यापक शांति और स्थिरता आने की उम्मीद : भारत

नई दिल्ली (आरएनएस)। भारत ने बुधवार को इजरायल और लेबनान के बीच युद्ध विराम की घोषणा का स्वागत किया और उम्मीद जताई कि इससे क्षेत्र में व्यापक शांति और स्थिरता आएगी, जो लंबे संघर्ष के कारण तनाव में घिरा हुआ है।

विदेश मंत्रालय की ओर से जारी एक बयान में कहा गया, हम इजरायल और लेबनान के बीच घोषित युद्ध विराम का स्वागत करते हैं। हमने हमेशा तनाव कम करने, संयम बरतने, बातचीत और कूटनीति के रास्ते पर लौटने की बात कही है। हमें उम्मीद है कि इन घटनाक्रमों से क्षेत्र में व्यापक शांति और स्थिरता आएगी।

पिछले एक साल में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम एशिया में संघर्ष के बढ़ने पर अपनी गहरी चिंता व्यक्त की और तनाव को कम करने की भारत की अपील को दोहराया। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इजरायल और हिजबुल्लाह के बीच युद्ध विराम लेबनान में स्थानीय समयानुसार बुधवार सुबह 4 बजे (02:00 जीएमटी/ सुबह 7:30 बजे भारतीय समय) लागू हो गया।

इससे पहले मंगलवार को यूएस प्रेसिडेंट जो बाइडेन ने कहा कि इजरायल और लेबनान के बीच युद्ध विराम समझौते के बाद लेबनानी सेना एक बार फिर अपने क्षेत्र पर कब्जा कर लेगी। उन्होंने कहा, अगले 60 दिनों में, इजरायल धीरे-धीरे अपनी बाकी सेना और नागरिकों को वापस बुला लेगा - दोनों पक्षों के नागरिक जल्द ही सुरक्षित रूप से अपने समुदायों में वापस लौट सकेंगे और अपने घरों का पुनर्निर्माण शुरू कर सकेंगे।

राष्ट्रपति बाइडेन ने कहा, इसका उद्देश्य शत्रुता को स्थायी रूप से समाप्त करना है।

छत्तीसगढ़ के अजय मंडल को दिल्ली कैपिटल्स ने 30 लाख में खरीदा, शशांक सिंह को पंजाब ने किया रिटेन

रायपुर (विसं)। छत्तीसगढ़ के ऑलराउंडर बल्लेबाज अजय मंडल को आईपीएल 2025 के ऑक्शन में दिल्ली कैपिटल्स ने 30 लाख के बेस प्राइज में खरीदा है। इससे पहले अजय दो वर्षों तक चेन्नई सुपर किंग्स का हिस्सा रहे थे, जहां उन्हें 20 लाख के बेस प्राइज में खरीदा गया था। इस बार उन्हें दिल्ली ने अपने साथ जोड़ा है।

प्रदेश के शशांक सिंह को पंजाब किंग्स ने रिटेन किया है, जो एक बड़ी उपलब्धि है। अजय मंडल ने तीनों फॉर्मेट में अपनी शानदार प्रदर्शन क्षमता साबित की है। 2023-24 रणजी ट्रॉफी में अजय ने पांच मैचों की नौ पारियों में 11 विकेट चटकाए और बल्लेबाजी में सात पारियों में 145 रन बनाए। वहीं, सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के सात मैचों में उन्होंने नौ विकेट लिए और सात पारियों में 109 रन बनाए। विजय हजारे ट्रॉफी के सात मैचों में आठ विकेट और 120 रन बनाए। इसके अलावा, सीसीपीएल के छह मैचों में अजय ने चार विकेट लिए और छह पारियों में 99 रन बनाए।

आर्यिका स्वाध्याय श्री माताजी एवं चर्या श्री माताजी का मंगल आगमन आज रायपुर शहर में

रायपुर (विश्व परिवार)। आचार्य श्री विभव सागर महाराज जी की सुशिष्या आर्यिका स्वाध्याय श्री माता जी एवं चर्या श्री माता जी का मंगल आगमन आज प्रात: काल रायपुर शहर के में होने जा रहा है वे आज सुबह पद्मप्रभ लाभांडी जैन मंदिर में प्रवेश करेंगी एवं उनकी आहार चर्या भी लाभांडी में संपन्न होगी। ज्ञात है कि माताजी द्वय का चातुर्मास इस वर्ष राजिम में संपन्न हुआ है था।

जम्मू-कश्मीर के अलग-अलग इलाकों में आतंकी नेटवर्क के खिलाफ बड़े छापे, कई गिरफ्तार

श्रीनगर (आरएनएस)। जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी नेटवर्क के खिलाफ पुलिस ने बड़ी कार्रवाई की। इस दौरान कई अलग-अलग इलाकों में छापे मारे गए और लोगों को गिरफ्तार किया गया।पुलिस ने यह छापेमारी विशिष्ट खुफिया सूचनाओं के आधार पर आवासीय घरों और आतंकी ठिकानों पर किया था, जहां से उन्हें हथियार, नकदी, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और दस्तावेज जब्त किए हैं। पुलिस का कहना है कि छापेमारी में बरामद सामग्री की जांच जारी है।

मुख्यमंत्री को राज्य स्तरीय भव्य पंथी नृत्य प्रतियोगिता के लिए मिला न्योता

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्य स्तरीय पंथी नृत्य प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ के साथ-साथ देश के विभिन्न राज्यों के पंथी नर्तक दल हिस्सा लेंगे। यह प्रतियोगिता बेमेतरा जिले के विकासखण्ड मुख्यालय नवागढ़ में 19 से 21 दिसंबर तक आयोजित की जाएगी। खाद्य मंत्री श्री दयाल दास बघेल के नेतृत्व में सतनामी समाज प्रमुखों के दल ने मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय से उनके निवास कार्यालय में भेंट कर उन्हें प्रतियोगिता में शामिल होने का न्योता दिया। मुख्यमंत्री ने श्री साय ने निमंत्रण को सहर्ष स्वीकार करते हुए जयंती कार्यक्रम में शिरकत करने का आश्वासन दिया।

मुख्यमंत्री श्री साय को प्रतिनिधिमण्डल ने बताया कि परम पूज्य गुरूघासी दास बाबा जी के 268 वीं जयंती के उपलक्ष्य में आगामी माह दिसंबर में जयंती मनाने राज्य स्तरीय पंथी नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। सभी समाज के लोगों से आपसी प्रेम और सौहाद्रपूर्ण वातावरण में इस आयोजन को सफल बनाने का अनुरोध किया गया है। देश के विभिन्न राज्यों के पंथी नर्तक दलों को प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए निमंत्रण भेजा रहा है। आयोजन में सहयोग देने वाले सभी समाज के लोगों को सम्मानित करने की भी योजना है।

तमिलनाडु की ओर बढ़ सकता है चक्रवात फेंगल, भारी बारिश के कारण स्कूल बंद किए गए

चेन्नई (आरएनएस)। तमिलनाडु में चक्रवात फेंगल के पहुंचने की संभावना बढ़ गई है। यह अगले 2 दिनों में श्रीलंका तट से होते हुए तमिलनाडु की ओर बढ़ सकता है।भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) का कहना है कि दक्षिण-पश्चिम बंगाल की खाड़ी के ऊपर बन रहे गहरे दबाव का बुधवार को चक्रवात में बदलने की पूरी संभावना है।इसके कारण तमिलनाडु के कई शहरों में भारी बारिश हो रही है। आईएमडी ने गुरुवार तक कई क्षेत्रों में अत्यधिक बारिश की संभावना जताई है।

तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई समेत अन्य जिलों में हो रही बारिश को देखते हुए स्कूलों में छुट्टी कर दी गई है।यहां तिरुवल्लूर, तंजावुर, मयिलादुथुरई, पुडुचेरी, कराईकल, चेन्नई, चेंगलपट्टू, तिरुवरुर और कुड्डालोर जिलों में स्कूलों और कॉलेज बंद रहेंगे।इसके अलावा इंडिगो एयरलाइंस ने राज्य के चेन्नई, तूतीकोरिन और मदुरै से आने-जाने वाली उड़ानों के लिए सलाह जारी की है और बताया है कि प्रतिकूल मौसम के कारण उड़ानें प्रभावित हो सकती है।

IMD का कहना है कि अगर दबाव उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ता रहा तो 27 नवंबर को यह चक्रवात में बदल जाएगा।इसके देखते हुए मौसम विभाग ने 27 नवंबर को 5 जिलों में अत्यधिक बारिश के लिए रेड अलर्ट, 27 से 29 नवंबर तक चेन्नई में येलो अलर्ट और 30 नवंबर तक कांचीपुरम, तिरुवल्लूर और चेंगलपेट सहित पड़ोसी जिलों में ऑरेंज अलर्ट जारी किया है।तमिलनाडु के तटीय इलाकों में भी लोगों को सावधान किया गया है।

चक्रवात को फेंगल नाम सऊदी अरब की ओर से दिया गया है, जो अरबी भाषा से लिया गया है। पिछले दिनों दाना चक्रवात का नाम कतर ने रखा था। उत्तरी हिंद महासागर में यह इस साल का तीसरा समुद्री तूफान है।बता दें, चक्रवातों के नामों की वर्तमान सूची 2020 में बनी है, जिसमें प्रत्येक सदस्य देश 13 नामों का सुझाव दिया है। इनका बारी-बारी उपयोग होता है।फेंगल के बाद अगले चक्रवात का नाम शक्ति श्रीलंका ने सुझाया है।

चक्रवात को देखते हुए जिलों में राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल की 7 टीमें तैनात है। मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने उच्च स्तरीय बैठक कर 24 घंटे नियंत्रण केंद्र चलाने और चिकित्सकों को तैयार रहने को कहा है। तूफान का असर पड़ोसी राज्यों में भी दिखेगा।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, गुरुवार 28 नवम्बर 2024
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

तामासिवनी में मनाया जनजातीय गौरव दिवस

आरंग (विश्व परिवार)। बुधवार को नवीन शासकीय महाविद्यालय तामासिवनी में जनजाति गौरव माह के अंतर्गत जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. (श्रीमती) रेणु माहेश्वरी ने की। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता गुप्तेश नामदेव ने जनजातीय नायकों और उनके ऐतिहासिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक योगदान पर प्रेरणादायक व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने जनजातियों द्वारा किए गए संघर्षो के बारे में छात्र-छात्राओं को अवगत कराया। महाविद्यालय की प्राचार्या द्वारा जनजातियों के जल, जंगल, जमीन के महत्व तथा उनके संरक्षण की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया। आभार प्रदर्शन आनंद शंकर बहादुर सहायक प्राध्यापक अंग्रेजी विभाग द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. आराधना चतुर्वेदी तथा गौरव नाग ने किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के समस्त शिक्षक शिक्षिकाओं सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

अतिथि व्याख्याता हिन्दी पद के लिए के लिए 6 दिसम्बर तक आवेदन आमंत्रित

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। शासकीय दाउ कल्याण कला एवं वाणिज्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय बलौदाबाजार में अतिथि व्याख्याता हिन्दी पद के लिए आवेदन आमंत्रित है। इच्छुक अभ्यर्थी अपने समस्त प्रमाण पत्र एवं आवश्यक दस्तावेज के साथ 6 दिसम्बर 2024 कार्यालयीन समय 5 बजे तक रजिस्टर्ड डाक अथवा वाहक के हस्ते कार्यालय से पावती प्राप्त कर सकते है। निर्धारित तिथि के पश्चात आवेदन पत्रों पर विचार नहीं किया जायेगा। विस्तृत जानकारी हेतु महाविद्यालय के वेबसाइट डीके बलौदाबाजार डॉट एसी डॉट इन पर देख सकते है।

उपार्जन केंद्रों में किसानों के लिए कई सुविधाएं, धान बेचने में सहूलियत

3100 की दर से 21 क्विंटल प्रति एकड़ धान खरीदी के लिए किसानों ने मुख्यमंत्री का किया आभार व्यक्त

बलौदाबाजार-भाटापारा (विश्व परिवार)। शासन के निर्देशानुसार खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में धान खरीदी का कार्य जिले में सुचारू रूप से जारी है। कलेक्टर श्री दीपक सोनी के मार्गदर्शन में जिले के 129 सहकारी समितियों के 166 उपार्जन केन्द्रों में पंजीकृत किसानों से धान खरीदी की जा रही है। धान बेचने उपार्जन केंद्रों में आने वाले किसानों के लिए विशेष व्यवस्था की गई है जिससे धान बेचने में सहूलियत हो रही है और किसानों में हर्ष व्याप्त है। विकासखंड बलौदाबाजार के ग्राम सकरी के किसान श्री टीकाराम वर्मा ने धान खरीदी केन्द्र में मिल रही सुविधाओं पर खुशी जाहिर करते हुए बताया कि वे धान बेचने सेवा सहकारी समिति सकरी आए हैं। यहां सुविधाएं काफी अच्छी है। धान बेचने में किसी तरह की कोई परेशानी नहीं है। छाया, पेयजल, बारदाना की उपलब्धता सहित सभी तरह की सुविधाएं किसानों को मिल रही हैं। साथ ही साथ सरकार 3100 की दर से 21 क्विंटल प्रति एकड़ किसानों से धान खरीदी कर रही है और धान की राशि 72 घंटे के भीतर हम किसानों के खाते में जमा हो रही है। इसके लिए किसान श्री वर्मा ने मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय सहित प्रशासन को धन्यवाद ज्ञापित किया। समिति प्रबंधक ने बताया कि सकरी समिति में अब तक 54 लाख 88 हजार रुपए के 2386 क्विंटल धान खरीदी की गई है।

पीएम आवास योजना 2.0 रैपिड एसेसमेंट सर्वे का कार्य 10 दिसम्बर 2024 तक

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। आवास हेतु रैपिड एसेसमेंट सर्वे काय्र 15 नवम्बर से 10 दिसम्बर 2024 तक किया जा रहा है। नागरिको की सुविधा के लिए निगम के सभी पांच जोन कार्यालय में शिविर लगाया जा रहा है। जिसका समय सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक चलेगा। बीएलसी हितग्राही जिनके पास स्वयं का जमीन, भूखण्ड पटटा है, पैसे की कमी के कारण अपना पक्का मकान निर्माण नहीं कर पा रहे है उनके लिए यह योजना बहुत उपयोगी है।

प्रथम फेस में कुल 5120 मकान का आबंटन स्वीकृत हुआ था। जिसमे से 4929 मकान पूर्ण हो गया है हितग्राही अपने मकान में निवास कर रहे है। वर्तमान में 191 मकान निर्माणाधीन है, प्रथम फेस में 15.08.2015 तक का लिया गया था। द्वितीय फेस 17.09.2024 विश्वकर्मा पूजा के दिन मान. प्रधानमंत्री जी द्वारा शुभारंभ किया गया। सर्वे के लिए आवश्यक दस्तावेज 1. लाभार्थियों को निर्धारित कट आफ तिथि 31.08.2024 से पूर्व निगम भिलाई क्षेत्र में निवासरत होने का दस्तावेज। 2. देश में कहीं भी स्वंय का मकान नहीं होना चालिए, इसके लिए निर्धारित प्रपत्र में शपथ पत्र प्रस्तुत करना है। 3. परिवार की वार्षिक आय 3 लाख से कम होना चाहिए। 4. भूमि स्वामित्व दस्तावेज पट्टा/ रजिस्ट्री/ आबादी पटटा प्रमाण पत्र। अन्य आवश्यक वैकल्पिक दस्तावेज 1. दिव्यांग हो तो 2. वरिष्ठ नागरिक हो तो 3.शासन की अन्या योजना से लाभ संबंधी दस्तावेज 4. बीपीएल राशन कार्ड परिवार का।

नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्रांतर्गत पीएम आवास योजना 2.0 के सुचारू रूप से क्रियान्वयन के लिए किये जा रहे प्रयास- 1. सभी जोन कार्यालय में शिविर का आयोजन किया गया है। 2. सभी वार्डो में मुनादी के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार कराया जा रहा है। 3. सभी वार्डो में डोर-टू-डोर सर्वे कार्य के लिए आवेदन फार्म के साथ आवश्यक दस्तावेज लिया जा रहा है। 4. निगम भिलाई क्षेत्र में पीएम आवास 2.0 के आवेदन की प्रक्रिया हेतु पाम्पलेट का वितरण एवं चस्पा किया जा रहा है। 5. होर्डिंग बोर्ड, फ्लेक्स, बैनर, पोस्टर के माध्यम से सभी क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री आवास योजना मोर मकान-मोर आस के तहत किरायेदार के रूप में निवासरत हितग्राहियों को अब तक 1281 आवास का आबंटन लॉटरी के माध्यम से किया जा चुका है। मोर मकान-मोर चिन्हारी के तहत ऐसे हितग्राही जिनका मकान सड़क, नाली, नहर निर्माण आदि से प्रभावित हुए है। ऐसे हितग्राहियो को 540 मकान का आबंटन किया गया है। नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्रांतर्गत किरायेदार के रूप में निवासरत है, उन सभी परिवारों को आवास पाने का सुनहरा मौका है। इसके लिए जल्द ही नगर निगम भिलाई सुपेला मुख्य कार्यालय के कक्ष क्रमांक 16 आवास शाखा में संपर्क कर आवेदन शुल्क 100 रूपये के साथ आवेदन कर सकते है।

सेजेस मनोरा में 3D प्लैनेटेरियम शो पर 650 विद्यार्थियों ने देखी ब्रह्मांड की गतिविधियां

कलेक्टर रोहित व्यास के निर्देश पर सभी विकासखंडों में आयोजित होगा थ्रीडी प्लैनेटेरियम शो

जशपुरनगर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के मंशानुरूप विद्यार्थियों को अंतरिक्ष विज्ञान में रूचि बढ़ाने और प्रोत्साहन के लिए जशपुर कलेक्टर रोहित व्यास के निर्देशन में कार्यक्रम के दूसरे दिन सेजेस मनोरा में 3ष्ठ प्लैनेटेरियम शो का आयोजन कराया गया। जिला पंचायत सीईओ अभिषेक कुमार और जिला शिक्षा अधिकारी पीके भटनागर के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में कई स्कूलों के 650 से अधिक बच्चों ने ब्रह्मांड की गतिविधियों और उनके रहस्य जानें।

यशस्वी जशपुर के नोडल अधिकारी विनोद कुमार गुप्ता ने बताया कि 3ष्ठ शो के माध्यम से विद्यार्थियों को गैलेक्सी, मिल्की-वे, सोलर सिस्टम, लॉन्च व्हीकल और सेटेलाइट के मेकैनिज्म, मून लैंडिंग, चंद्रमा की सतहे, प्लैनेट्स, भविष्य में प्लैनेट्स और सब-प्लैनेट्स पर संभावनाओं को दिखाया जा रहा है। मनोरा में आयोजित कार्यक्रम में पीएम श्री अंग्रेजी माध्यम विद्यालय मनोरा, सेजेस हिंदी माध्यम विद्यालय मनोरा, पूर्व माध्यमिक शाला कांटाबेल और मिडिल स्कूल मनोरा के बच्चों ? ने बुधवार को प्लैनेटेरियम शो देखा है।

विद्यार्थियों ने किया अनुभव साझा- प्लैनेटेरियम शो का अनुभव साझा करते हुए विद्यार्थियों ने बताया कि किताब में पढ़ी हुई जानकारीयों को वे प्लैनेटेरियम शो के माध्यम से विजुलाइज कर पा रहे हैं, उनका इस प्रकार का यह पहला अनुभव है। कार्यक्रम में उपस्थित विकासखंड शिक्षा अधिकारी संजय पटेल ने बच्चों की उत्सुकता और उनके खिले चेहरे देखकर कलेक्टर रोहित व्यास को धन्यवाद दिया है। कार्यक्रम में बीआरसीसी तरुण पटेल सहित सेजेस प्राचार्य एवं सभी विद्यालयों के शिक्षक- शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

राज्यपाल ने नक्सली हिंसा में घायल जवानों को दी आर्थिक सहायता

रायपुर (विश्व परिवार)। /राज्यपाल श्री रमेन डेका ने अपनी संवेदनषीलता का परिचय देते हुए नक्सली हिंसा में घायल हुए कांकेर जिले के जिला रिजर्व फोर्स के दो जवानों श्री खिलेष्वर गावड़े और श्री हिरामन यादव को बेहतर ईलाज के लिए 25-25 हजार रूपए की आर्थिक सहायता अपने स्वेच्छानुदान मद से प्रदान की है। इसके अलावा सषस्त्र सेना झण्डा दिवस के अवसर पर संचालनालय सैनिक कल्याण बोर्ड को 2 लाख रूपए की राशि भी स्वेच्छानुदान मद से प्रदान की है। उन्होंने आम जनता से भी 7 दिसम्बर को मनाए जाने वाले सषस्त्र सेना झण्डा दिवस के उपलक्ष्य में भूतपूर्व सैनिकों के कल्याण के लिए अधिक से अधिक राशि देने की अपील की।

शासकीय मिनीमता कन्या महाविद्यालय द्वारा संविधान दिवस के उपलक्ष्य में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। आज दिनांक 26 नवंबर 2024 को शासकीय मिनीमता कन्या महाविद्यालय, बलौदाबाजार के द्वारा संविधान दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर महाविद्यालय की प्रभारी प्राचार्य डॉ. कल्पना उपाध्याय के द्वारा भारतीय संविधान की प्रस्तावना के सामूहिक वाचन कराया गया। जिसमें सभी विद्यार्थियों और प्राध्यापकों ने संविधान की मूल भावना और उद्देश्यों को आत्मसात करने का संकल्प लिया। इसके उपरांत विभिन्न वक्ताओं ने भारतीय संविधान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उसके निर्माण की प्रक्रिया और इसके महत्व पर अपने विचार साझा किए। इस अवसर पर महाविद्यालय क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा दिया इसमें प्रथम स्थान पर तबस्सुम बीएससी फस्ट ईयर तथा द्वितीय स्थान पर प्रियंका सेन सेकंड ईयर रही इसके पश्चात अजीम प्रेमजी फाउंडेशन और राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के संयुक्त तत्वाधान में संविधान दिवस पर क्विज तथा व्याख्यान का आयोजन किया गया था जिसमें संविधान कब लागू हुआ संविधान निर्माण उम कितना समय लगा संविधान निर्माण सभा में कितने सदस्य थे जैसे प्रश्नों के माध्यम से छात्राओं के संविधान के संबंध में जानकारी को परख गया व्याख्यान के दौरान प्रोजेक्टर के माध्यम से संवैधानिक मूल्यों के हनन से संबंधित लघु फिल्मों को प्रदर्शित किया गया।

छत्तीसगढ़ चेम्बर के व्यापारिक संघों को आईडीबीआई करेंसी चेस्ट द्वारा करेंसी नोट एवं चिल्हर वितरण किया गया

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी, महामंत्री अजय भसीन, कोषाध्यक्ष उत्तमचंद गोलछा, कार्यकारी अध्यक्ष राजेंद्र जग्गी, विक्रम सिंहदेव, राम मंधान, मनमोहन अग्रवाल ने बताया कि बुधवार, दिनांक 27 नवम्बर, 2024 को दोपहर 1.00 बजे चेम्बर कार्यालय, चै.देवीलाल व्यापार उद्योग भवन, बाम्बे मार्केट, रायपुर में आईडीबीआई बैंक पचपेड़ीनाका, रायपुर शाखा के द्वारा चेम्बर से संबद्ध एसोसियेशन- रायपुर प्लायवुड टेऊर्स एसोसियेशन, रायपुर मशीनरी मर्चेन्ट एसोसियेशन, डुमरतराई व्यापारी कल्याण महासंघ एवं रायपुर स्वीट एंड स्नैक्स एसोसियेशन को 1, 2, 5, 10 एवं 20 के सिक्के तथा 20, 50 एवं 100 रूपये के करेंसी नोट का वितरण किया गया। इस अवसर पर चेम्बर कार्यकारी अध्यक्ष-राजेन्द्र जग्गी, विक्रम सिंहदेव एवं राम मंधान तथा आईडीबीआई बैंक पचपेड़ीनाका, रायपुर शाखा के बैंक अधिकारी श्री रंजन सिंह, श्री मनोज माटी, श्री निलय सिंह एवं मनोज सेठी प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

CHHATTISGARH STATE POWER TRANSMISSION COMPANY LIMITED
(A Govt. of Chhattisgarh Undertaking) CIN-U40108CT2003SGC015820GSTN-22AADCC5773E1ZX
OFFICE OF THE EXECUTIVE DIRECTOR (LINE) Block-4, Near CSPHCL Dispensary, Dagania, Raipur (C.G.)
Website: www.cspc.co.in E-Mail- ce.eht@cspc.co.in Phone no. 0771 - 2574221, 2574224 Fax No.2574222

ED/LINE/Works/EE-I/TR-1133/1763 Raipur, Date:26.11.2024

NOTICE INVITING TENDER

Sealed tenders are invited for construction of following EHV line on labor contract basis:

TR No	Name of work	EMD (Rs)	Cost of tender form (Rs) (Incl. GST)	Date of opening
TR-1133 RFX No. - 8100040418	Single coat red oxide and double coat aluminium painting work of tower of 220 KV & 132 KV lines under EE (EHT:M) Dn. Bilaspur	48,550/-	5,000/-	19.12.2024

For all other details of NIT and term & condition, please visit our website www.cspc.co.in/csptcl_tendernotices

-sd-
EXECUTIVE DIRECTOR (Line)
CSPTCL-RAIPUR

SAVE ELECTRICITY

SAMVAD- 42234/ 3

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि सामान्य आवास योजनान्तर्गत, शंकर नगर, रायपुर में स्थित **भवन क्र. एम.आई.जी.-57, सेक्टर-01, श्रीमती प्रीति श्रीवास्तव पति श्री रजनीश श्रीवास्तव,** को इस कार्यालय के नामांतरण **आदेश क्रमांक-583 दिनांक 26.12.2000** के माध्यम से नामांतरित किया गया है। उक्त भवन का पूर्ण मूल्य जमा कर दिनांक 14.03.1995 को सेलडीड पंजीकृत करा लिया गया है। **वर्तमान में नामांतरी श्रीमती प्रीति श्रीवास्तव पति श्री रजनीश श्रीवास्तव, निवासी- द्वारा श्रीमती आशालता श्रीवास्तव, सेन्ट्रल बैंक के सामने, सिविल लाईन्स, रायपुर, तह. व जिला-रायपुर (छ.ग.)** के द्वारा आवेदन पत्र, विक्रय इकरारनामा, शपथ पत्र तथा अन्य दस्तावेज प्रस्तुत कर उक्त भवन को **क्रेता 1. श्री विकास श्रीवास्तव पिता स्व. श्री मदन मोहन श्रीवास्तव, 2. श्री विनम्र श्रीवास्तव पिता श्री विकास श्रीवास्तव, 3. श्री वरूल श्रीवास्तव पिता श्री विकास श्रीवास्तव, सभी निवासी- सेन्ट्रल बैंक के सामने, सिविल लाईन्स, रायपुर, तह. व जिला-रायपुर (छ.ग.)** को विक्रय करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त भवन के विक्रय के संबंध में किसी व्यक्ति, शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय, नगर पंचायत कूंरा, जिला-रायपुर (छ.ग.)
e-mail -- npkunraw2016@gmail.com
क्र. / 897/लो.नि.वि./न.पं. / 2024-25 कूंरा, दिनांक 26.11.2024

ई-प्रोक्योरमेंट निविदा सूचना

Mail: Portal: http://eproc.cgstate.gov.in
UADD Portal: http://uad.cg.gov.in

नगर पंचायत कूंरा द्वारा एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्यो हेतु ऑनलाईन (Online) निविदा आमंत्रित की जाती है:-

क्र.	सिस्टम टेंडर क्रमांक	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में)	निविदा ऑनलाईन करने की प्रारंभिक / अंतिम तिथि
1	2	3	4	5
1	61139	वार्ड क्र. 13 कार्यालय भवन में अतिरिक्त भवन निर्माण कार्य।	28.98	प्रारंभिक तिथि 26.11.2024 अंतिम तिथि 17.12.2024

उपरोक्त निर्माण कार्यो की निविदा की सामान्य शर्ते, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट वेबपोर्टल http://eproc.cgstate.gov.in अथवा विभागीय वेबसाईट http://uad.cg.gov.in से भी देखी / डाउनलोड की जा सकती है।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पंचायत कूंरा

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
ई-निविदा सूचना

निविदा सूचना सं.: ई-आर-टी-89-24-25
दिनांक: 20.11.2024
कार्य का नाम: मांढर में पुराने टूटे-फूटे, जीर्ण-शीर्ण क्वार्टर (टाइप-I क्वार्टर - 8 और टाइप-II क्वार्टर - 1) को नए 9 यूनिट टाइप-II क्वार्टरों के साथ बदलना। | **निविदा मूल्य:** ₹ 2,75,48,908/-, | **ईएमडी:** ₹ 2,87,800/-
निविदा प्रस्तुत करना: दिनांक **26.12.2024** के **11:00** बजे तक, **निविदा खोलना:** दिनांक **26.12.2024** के **11:00** बजे। विस्तृत विवरण/निविदा दस्तावेज की खरीद, पात्रता मानदंड एवं उपरोक्त कार्य के पूर्ण विवरण हेतु वरि. मंडल इंजिनियर (समन्वय), द.पू.म.रेलवे, रायपुर के कार्यालय से संपर्क करें अथवा वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध निविदा दस्तावेजों का अवलोकन/डाउनलोड करें।

वरिष्ठ मंडल अभियंता - I,
PR/R/ENGG/MS/173 **द.पू.म. रेलवे, रायपुर**
South East Central Railway @secrail

कार्यालय, नगर पालिक निगम, रायपुर
जोन क्रमांक-05

1010 / जोन क. 5/लो.क.वि./2024, रायपुर, दिनांक 27.11.2024

निविदा आमंत्रण सूचना

एकीकृत पंजीयन प्रणाली के अंतर्गत द से प्रवर श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नांकित कार्यो हेतु सीलबंद निविदायें तीन लिफाफा पद्धति से दिनांक 19.12.2024 तक को 4:00 बजे तक स्पीड पोस्ट से माध्यम से नगर पालिक निगम जोन कार्यालय क्रमांक 5 में आमंत्रित की जाती है। इस हेतु निविदा प्रपत्र प्राप्त करने के लिये दिनांक 09.12.2024 तक आवेदन के साथ निर्धारित प्रपत्र की राशि जमा करने के पश्चात प्राप्त किये जा सकेंगे। दिनांक 11.12.2024 तक निविदा प्रपत्र जारी होंगे । प्राप्त निविदायें दिनांक 19.12.2024 को सांय 05:00 बजे खोली जावेगी।

क्र.	कार्य का नाम	प्राक्कलन राशि (लाख में)	अमानत राशि (रूपये)	निविदा प्रपत्र का मूल्य	कार्य की अवधि	एस ओ आर नॉन एस.ओ.आर
1	वार्ड क्र.-40 अतर्गत विभिन्न स्थानों में नाली, पुलिया चेंबर व सड़क मरम्मत कार्य। (संधारण मद) तृतीय निविदा	1.96	3000/-	300/-	3 माह	P.W.D. SOR (Building) 01.01.2015
2	जोन क्र-05 अतर्गत वार्ड क 40.41.42 को विभिन्न स्थानों में हुए गढ्ढों का मरम्मत कार्य।	1.50	3000/-	300/-	1 माह	P.W.D. SOR (Building) 01.01.2015
3	ठाकुर प्यारेलाल सिंह वार्ड क्र.-40 गौतम नगर में कार्यालय भवन निर्माण कार्य। द्वितीय निविदा (अधोसंरचना)	10.00	10000/-	750/-	4 माह	P.W.D. SOR (Building) 01.01.2015
4	ठाकुर प्यारेलाल सिंह वार्ड क्र- 40 अंतर्गत डंगनिया में कार्यालय भवन निर्माण कार्य। (अधोसंरचना मद) (चतुर्थ निविदा)	10.00	10000/-	750/-	4 माह	P.W.D. SOR (Building) 01.01.2015
5	जोन क्रमांक-05 अंतर्गत सफाई कार्य हेतु 12 अकुशल श्रमिक प्लेसमेंट के माध्यम से रखे जाने 5 बावत।	19.90	20000/-	750/-	12 माह	P.W.D. SOR (Building) 01.01.2015
6	वामनराव लाखे वार्ड क्र-66 अतर्गत क्षेत्र में चेंबर मरम्मर संधारण / निर्माण कार्य।	3.30	5000/-	750/-	5 माह	P.W.D. SOR (Building) 01.01.2015

शर्ते :-
1 निविदा के दस्तावेज रजिस्टर्ड पोस्ट स्पीड पोस्ट के माध्यम से प्रस्तुत करना होगा।
2 कार्य से संबंधित अन्य जानकारी एवं शर्ते कार्यालयीन दिवस में नगर पालिक निगम जोन क्रमांक 5 कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
3 तीन वर्ष के आयकर की बाध्यता नए फर्मो के लिए बाध्यकारी नहीं होगी।

घरो से निकलने वाले सूखा और गीला कचरे को सफाई मित्र (वाहन) को देवें।

जोन कमिश्नर
जोन क्र . -5
नगर पालिक निगम, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा कॉलोनी वीरसावरकर नगर हीरापुर रायपुर में निर्मित **CH** भवन योजना अंतर्गत दुकानों/भूखण्डों में से भूखण्ड/**भवन क्रमांक -CH2275, सुरेन्द्र कुमार - पिता श्री राम कुमार** को भाड़ाक्रय/पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा दिनांक **11/08/2017** को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन क विक्रय हेतु दिनांक **21/11/2024** को निष्पादित विक्रय इकररानामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन **श्री शाहरूख राणा - पिता श्री उम्मेद राणा** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की है।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय/वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के 15 दिन के अंदर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नही की जावेंगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /16056/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 27-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16056
वार्ड का नाम- 01 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 01 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801N0690C** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **ADESH AGRAWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **ISHWARI DAYAL AGRAWAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **NALINI VERMA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SEVAKRAM VERMA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./15932/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 27-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15932
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227L00466** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SMT. NITU SHUKLA** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O AVINASH SHUKLA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती नीलू शर्मा** पिता/पति श्री/श्रीमती **पति - श्री आदित्य प्रकाश शर्मा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./15860/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 27-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15860
वार्ड का नाम-29- गुरू गोविंद सिंह वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 29 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR334E00352** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **DHANMATI SAGAR** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O BHARAT SAGAR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री संजय सागर** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता - स्व. श्री भारत सागर** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./15856/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 27-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15856
वार्ड का नाम-12- महात्मा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 12 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR225B00160** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SHIVPYARI DEVI BAJAJ, PRIYANKA BAJAJ, NEMICHNAD BAJAJ, DEVKISHAN BAJAJ** पिता/पति श्री/श्रीमती ... के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. श्रीमती सिमरजीत कौर अससी पति - श्री करनैल सिंह अससी** पिता/पति श्री/श्रीमती **2 श्री करनैल सिंह अससी - पिता स्व. श्री तारा सिंह अससी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर गुरूवार 28 नवंबर 2024

नगरीय चुनाव एवं धान बिक्री केंद्र की तैयारी पर हमारी रहेगी फोकस- कलेक्टर एस जयवर्धन

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार) धान बिक्री केंद्रों की सुदृढ़ व्यवस्था, नगरीय निकाय चुनाव की तैयारी को लेकर हमारी प्राथमिकता रहेगी। धन केंद्र पर सही खरीदी एवं उठाव में कोई परेशानियां किसानों को न हो इस पर हमारी फोकस रहेगी। उक्त विचार मीडिया और प्रशासन के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने के लिए पत्रकारों से चर्चा करते हुए सूरजपुर जिला के नवपदस्थ कलेक्टर एस जयवर्धन ने कही। आज जिला मुख्यालय के संयुक्त जिला कार्यालय के सभाकक्ष में नवपदस्थ कलेक्टर एस. जयवर्धन व एसपी प्रशांत कुमार ठाकुर की संयुक्त उपस्थिति में जिले भर के पत्रकार बंधुओं के साथ वार्ता का आयोजन किया गया । जिसमें पत्रकारो से परिचय प्राप्त कर, जिले के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई। कलेक्टर ने बताया कि जिला प्रशासन एक टीम के रूप में संगठित होकर उत्कृष्टता व गुणवत्ता के साथ कार्य करने के लिए प्रतिबद्ध हैं और शासन के मंशानुरूप राज्य व केंद्र शासन के योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य कर रहा है। जिले के विकास के लिए क्या-क्या सकारात्मक कदम उठाये जा सकते हैं इस पर गहन चर्चा की गई व आपसी मीडिया और प्रशासन के बीच समन्वय स्थापित करने पर बल दिया गया। कलेक्टर ने पत्रकारों द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब में कहां की लोकल इलेक्शन पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। धान खरीदी एवं बिक्री से संबंधित कोई समस्या न आए इसका ध्यान में रखते हुए राइस मिलरो के साथ बैठक की जाएगी। सभी धान खरीदी केदो की समस्या दूर करने हेतु पहल किया जाएगा। समय पर धान का उठाव हो उसके लिए सुदृढ व्यवस्था की जाएगी ।जिले में जल जीवन मिशन असफल नजर आ रहा है, चांदनी बिहारपुर जैसे सुदूर क्षेत्रों में पानी टंकी बना दी गई है घरों में जल आपूर्ति नहीं हो रही है जबकि यह केंद्र सरकार के महत्वपूर्ण योजना है इसे कैसे निपटेंगे के सवाल पर कलेक्टर ने कहा कि पहुंच विहीन कुछ ऐसे गांव है जैसे उड़गी, प्रेमनगर बिहारपुर यह अति पिछड़ा क्षेत्र है यहां की व्यवस्था हेतु पहल किया जाएगा, यहां की समस्याओं को प्रभारी मंत्री को अवगत करा दिया गया है जैसे ही प्रभारी मंत्री का पहल पर कुछ व्यवस्था बनती है तो इन समस्याओं को दूर किया जाएगा ।इस अवसर पर पत्रकार बंधु व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

संदिग्ध अवस्था में मिली शिक्षक की लाश

बिलासपुर(विश्व परिवार)। रविवार रात बिलासपुर पुलिस मैदान में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था। कवि सम्मेलन में शामिल होने रतनपुर वार्ड क्रमांक 5 कसेरपारा निवासी तीन शिक्षक भी गए थे। कवि सम्मेलन देखकर रात करीब एक- डेढ़ बजे कार से वापस लौटे। तीनों शिक्षकों को उनके घर के पास उतार दिया गया। इनमें से दो शिक्षक तो अपने घर सकुशल पहुंच गए, लेकिन पथरिया में पदस्थ शिक्षक 54 वर्षीय राजेंद्र कसेर घर नहीं पहुंचा। रातभर परिजन उसकी प्रतीक्षा करते रहे। सुबह बिकमा तालाब नेताजी स्कूल के पास सड़क किनारे नाले के करीब संदिग्ध अवस्था में शिक्षक की लाश देखी गई। लोगों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। शव के नाक और पसली में चोट मिले। पुलिस को आशंका है कि नशे की हालत में गिर जाने की वजह से लगी चोट के चलते राजेंद्र कसेर की मौत हुई होगी, लेकिन राजेंद्र कसेर के परिजनों ने पूरे घटनाक्रम पर संदेह जताते हुए कहा कि राजेंद्र कसेर की मौत स्वाभाविक नहीं लगती और इसकी जांच की जरूरत है। फिलहाल शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस मामले में जांच कर रही है।

धान उपार्जन केन्द्रों में मिल रही सुविधाओं से किसान प्रसन्न

सूरजपुर(विश्व परिवार)। राज्य शासन के निर्देशानुसार इस खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में जिले में धान खरीदी का कार्य निरंतर जारी है। कलेक्टर श्री एस जयवर्धन के मार्गदर्शन में पंजीकृत किसानों से जिले के 54 उपार्जन केन्द्रों में धान खरीदी की जा रही है। सभी उपार्जन केंद्रों में समिति में द्वारा किसानों के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं जिससे जिले के किसान प्रसन्न है। गौरतलब है कि किसानों के उपज का वास्तविक मूल्य देने के लिए राज्य शासन द्वारा 3100 प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी का कार्य किया जा रहा है। किसानों से प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान खरीदने और खरीदी केन्द्र में किसानों को मिल रही सुविधाओं से किसान खुश नजर आ रहे है। किसानों से समर्थन मूल्य में खरीदी कर शासन उन्हें आर्थिक रूप से संबल बना रहा है। जिले के भैयाथान विकासखंड के धान उपार्जन केंद्र भैयाथान, आए श्री घनश्याम सिंह ने बताया कि वे 80 क्विंटल धान लेकर आए हैं। उन्होंने छत्तीसगढ़ शासन द्वारा 3100 क्विंटल की दर से धान खरीदी करने पर प्रसन्नता जाहिर की है। उन्होंने इसे शासन की यह बहुत अच्छा योजना बताया। जिससे सभी किसानों को बहुत अच्छा लाभ मिल रहा है। इसके अलावा इस धान उपार्जन केंद्र में धान बेचने आए श्री अशोक बताते हैं कि धान उपार्जन केंद्र में उनके पिता जी के साथ 18 क्विंटल धान लेकर आए हैं। उन्होंने धान उपार्जन केंद्र में समिति द्वारा धान खरीदी को लेकर उपलब्ध सुविधाओं को लेकर खुशी जाहिर।

ग्राम लटोरी में हुआ समाधान शिविर का आयोजन

सूरजपुर(विश्व परिवार)। आज जिले के सूरजपुर जनपद अंतर्गत ग्राम पंचायत लटोरी में समाधान शिविर का आयोजन किया गया था। जिसमें आसपास के क्षेत्रवासी अपनी समस्याओं से संबंधित आवेदन के साथ शिविर स्थल पर पहुंचे थे। समाधान शिविर में कुल 94 आवेदन प्राप्त हुए । इस समाधान शिविर में बाबूलाल अग्रवाल, जन प्रतिनिधि व गणमान्य नागरिक, कलेक्टर श्री एस.जयवर्धन, पुलिस अधीक्षक श्री प्रशांत ठाकुर और जिला पंचायत सीईओ श्रीमती कमलेश नंदिनी साहू सहित, एस डी एम सूरजपुर श्रीमती शिवानी जायसवाल सभी जिला स्तरीय अधिकारीगण एवं जनप्रतिनिधि गण उपस्थित थे। आयोजित शिविर में कलेक्टर श्री जयवर्धन ने सभी हितग्राहियों को शासकीय योजनाओं का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाने की अपील की। उन्होंने हितग्राहियों द्वारा प्रस्तुत आवेदनों का अवलोकन करते हुए संबंधित विभाग को निराकरण हेतु निर्देशित किया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को सभी आवेदनों पर त्वरित निराकरण के निर्देश दिये और समय-सीमा में समाधान कारक निराकरण करने की बात कही। इस अवसर पर उन्होंने सभी को आयुष्मान कार्ड बनवाने और अपडेट करने के लिए कहा ताकि शासन की स्वास्थ्य योजना का लाभ आसानी से मिल सके। इस दौरान उन्होंने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि शासन सभी को पक्का आवास उपलब्ध करा रही है ऐसे में पीएम आवास योजना का लाभ सभी हितग्राही उठाएं। इसके साथ ही उन्होंने सभी उपस्थित जनों को अपने आधार कार्ड को अपडेट रखने की बात कही ताकि आसानी से शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सभी को मिल सके। इसके अलावा उन्होंने सभी हितग्राहियों को आंगनबाड़ी में बच्चों एवं माताओं को मिलने वाली सुविधाओं का लाभ लेने के लिए भी कहा। इस अवसर पर कृषि, मत्स्य और महिला बाल विकास विभाग के विभिन्न योजनाओं के तहत सामग्रियों का वितरण भी हितग्राहियों को किया गया। साथ ही इस अवसर पर गर्भवती महिलाओं का गोदभराई संस्कार भी महिला बाल विकास विभाग की ओर से किया गया।

भारतीय संविधान कर्तव्य एवं अधिकार दोनों को बोध कराता है संविधान दिवस पर हुआ है आयोजन

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-भटगांव कोल इंडिया एस सी/ एस टी इम्प्लाई एसोसिएशन एस ई सी एल भटगांव के तत्वाधान में 26 नवम्बर संविधान दिवस धूमधाम से मनाया गया द्य कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मंगल राम (वरिष्ट प्रबंधक), विशिष्ट अतिथि बिसनोई , नगर पंचायत अध्यक्षा श्रीमती विमला रजवाड़े, देवा रजवाड़े, प्राचार्य धन्ना स्वामी, आर पी राम, आर राव, एच एल यादव थे ।

सर्वप्रथम मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों के द्वारा संविधान की पुस्तक, गौतम बुद्ध, बाबा साहब भीम राव आंबेडकर एवं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, ज्योतिबा फुले को माल्यार्पण कर दीप प्रज्ज्वलित किया गया तथा संविधान के प्रियम्बल जो संविधान की आत्मा है का वाचन किया गया

समस्त अतिथियों के द्वारा संविधान की जानकारी दी गई जिसमे संविधान किस तरह बना और संविधान के अनुच्छेदों को पढ़ा गया एवं उनकी जानकारी मुख्य अतिथि एवं प्रवक्ताओ के द्वारा दी गयी द्य

इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से को सिस्टा संगठन के कार्यकर्ता एवं अन्य सहयोगी में हंशा राम प्रधान, धन सिंह सरूता, बसंत भूमरकर, चन्द्रिका प्रधान, कौशल चंद्रा, पुखराम ओगर, राजेश पाटिल, अभिनव महोबिया, राजकुमार खरे हृदय आदित्य, फ्रित निराला, टीकाराम मनहर, फ्रित निराला, जयराम सिदार, लालचंद, अशोक टोप्पो, आसीत टोप्पो, राजीव टोप्पो, मनमोहन सिंह, राधा कृष्ण सोनकापर, भिरगू प्रसाद, कैलाश खंडेराव, भूषण प्रसाद सूर्यवंशी, मीना सूर्यवंशी, क्रांति बाई, तुलसी सिंह, दुर्गा पाटिल, सरस्वती भगत, किरण कुजूर, नीता निराला सहित अन्य सभी कार्यकर्ता उपस्थित रहे और कार्यक्रम को सुचारू रूप से संचालित किया।

जल जीवन मिशन के लंबित कार्यों पर कलेक्टर ने जताई नाराजगी

कवर्धा(विश्व परिवार)। कलेक्टर गोपाल वर्मा ने समय-सीमा की बैठक में जिले के विभिन्न अहम विषयों पर गहन समीक्षा की। उन्होंने खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 के धान खरीदी, जल जीवन मिशन की प्रगति, हिट एंड रन मामलों के निराकरण, और अन्य विकास कार्यों पर अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए। बैठक में जिला पंचायत सीईओ अजय त्रिपाठी,अपर कलेक्टर डॉ मोनिका कौडों, सभी एसडीएम, डिप्टी कलेक्टर, और जिला स्तरीय स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे। बैठक में बताया गया कि जिले में अब तक 11042 पंजीकृत किसानों से 5,48,870.40 क्विंटल धान खरीदी की जा चुकी है। 27 नवंबर को 108 खरीदी केंद्रों में 2868 टोकनों (1288 समितियों द्वारा जारी और 1580 'टोकन तुहार हाथ' ऐप के माध्यम से) के माध्यम से 133301.60 क्विंटल धान खरीदी का लक्ष्य है।कलेक्टर ने सेवा सहकारी समितियों और स्व सहायता समूहों को पीडीएस बारदाना की आपूर्ति 100 प्रतिशत सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। किसानों द्वारा प्रदाय किए गए जूट बारदाने पर 25 रूपए प्रति नग का भुगतान होगा। कलेक्टर वर्मा ने जल जीवन मिशन के तहत 51 लंबित कार्यों को लेकर नाराजगी जताई। उन्होंने ठेकेदारों को एक सप्ताह में कार्य शुरू करने का अल्टीमेटम दिया। बैठक में पीएचई कार्यपालन अभियंता राजपूत ने बताया कि 19 स्थलों पर ग्राम पंचायतों की आपत्तियों के कारण पानी टंकी निर्माण कार्य शुरू नहीं हो सका। कलेक्टर ने स्थल विवादों को जल्द निपटाने के निर्देश दिए।

हिट एंड रन मामलों का त्वरित निपटान सुनिश्चित करें- बैठक में हिट एंड रन मामलों की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने बताया कि जिले में ऐसे कुल 29 आवेदन प्राप्त हुए हैं। इन प्रकरणों को क्लेम इनक्रायरी ऑफिसर (एसडीएम) को भेजा गया है। अब तक 2 मामलों में निर्णय (ऑर्डर) जारी हो चुका है, जबकि 6 प्रकरण ऑर्डर के लिए भेजे गए हैं। उन्होंने संबंधित एसडीएम को सभी मामलों का शीघ्र निपटान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

आयुष्मान कार्ड अभियान और जन औषधि केंद्र खोलने के निर्देश- कलेक्टर ने जिले के सभी नागरिकों को आयुष्मान योजना से जोड़ने के लिए महिला एवं बाल विकास विभाग की आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और मितानिनों के माध्यम से अभियान चलाने का निर्देश दिया। ब्लॉक स्तर पर प्रशिक्षण देकर इन्हें आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रक्रिया में शामिल किया जाएगा। साथ ही, लोहारा, पिपरिया, बोडला, और कुकदूर में जन औषधि केंद्र खोलने की प्रक्रिया तेज करने के लिए निर्देश दिए।

सरोवर स्थलों में ग्रामीणों ने मिलकर मनाई संविधान दिवस की खुशियाँ

जशपुरनगर(विश्व परिवार)। जिले में निर्मित अमृत सरोवर स्थलों में विशेष उत्सव का आयोजन कर संविधान दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रत्येक वर्ष 26 नवंबर को संविधान दिवस मनाया जाता है। इसी तारतम्य में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना अंतर्गत ग्राम पंचायत क्षेत्र में निर्मित अमृत सरोवर तालाबो में सामाजिक समरसता एवं भाईचारा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से संविधान दिवस के अवसर पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अभिषेक कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि ज़िले के विभिन्न ग्राम पंचायतों में विगत वर्षों में महात्मा गांधी नरेगा एवं अन्य विभागीय योजनाओं के अभिसरण से अमृत सरोवर तालाबो का निर्माण किया गया है। अमृत सरोवर निर्माण का मुख्य उद्देश्य आजादी के महत्व को रेखांकित करते हुए सामाजिक समरसता भाईचारा को बढ़ावा देते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण एवं जल संचय की भावना को बढ़ाना है। 26 नवंबर को संविधान दिवस मनाए जाने का मूल उद्देश्य आम नागरिकों को अपने मूल अधिकार एवं कर्तव्यों से अवगत कराने एवं संविधान के बारे में जानकारी देना है। इस ऐतिहासिक दिन को स्मरणीय बनाने के लिए अमृत सरोवर स्थल पर विशेष समारोह का आयोजन किया गया। इस आयोजन में सरपंच, पंच व अन्य जनप्रतिनिधि तथा समाज के सभी वर्ग के लोग, अमृत सरोवर उपयोगकर्ता समूह, शासकीय अधिकारी-कर्मचारियों की सहभागिता रही।

भैयाथन में उद्यमिता जागरूकता शिविर का आयोजन''स्वालंबन'' हेतु दी गई जानकारी

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- शासकीय पंडित रविशंकर त्रिपाठी महाविद्यालय, भैयाथान में अध्ययनरत छात्र छात्राओं को नवीन उद्योग स्थापना एवं स्वरोजगार अपनाने के लिए प्रोत्साहन हेतु विभागीय योजनाओं की जानकारी देने के लिए एक दिवसीय उद्यमिता जागरूकता शिविर स्वालंबन का आयोजन जिला प्रशासन के तत्वाधान में जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र द्वारा किया गया, जिसमें शासकीय महाविद्यालय, भैयाथान के अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को प्रधान मंत्री रोजगार सृजन कार्यकम, प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उन्नयन योजना और नवीन औद्योगिक विकास नीति 2024-30 के संबंध में जानकारी विभागीय अधिकारियों द्वारा विस्तार से दिया गया । इस अवसर पर जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र,

सूरजपुर के प्रबंधक अवधेश कुमार कुशवाहा द्वारा छत्तीसगढ़ शासन की नवीन औद्योगिक विकास नीति 2024-30, नवीन उद्योग स्थापना, लायसेंसिंग प्रकिया और विभागीय सुविधाओं के संबंध में विस्तार से जानकारी दिया गया। चार्टर्ड एकाउण्टेंट हिमांशु अग्रवाल द्वारा प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उन्नयन योजना, आयकर एवं वस्तु एवं सेवा कर के अंतर्गत जानकारी दी गयी। महाविद्यालय के प्राचार्य रंजीत कुमार सतपुते द्वारा योजनाओं का लाभ लेकर स्वरोजगार स्थापना हेतु छात्र-छात्राओं प्रोत्साहित किया गया। भारतीय स्टेट बैंक, भैयाथान के क्षेत्रीय अधिकारी द्वारा बैंक ऋण प्रक्रिया की जानकारी दिया गया। इसके अलावा श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल, सफ्ल उद्यमी एवं श्री भोलेनाथ अग्रवाल, सफ्ल उद्यमी द्वारा उद्योग को सफ्ल संचालन के लिए टिप्स दिये। इस स्वावलंबन शिविर में जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र, सूरजपुर के सहायक प्रबंधक, श्री संजय लकड़ा, महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक श्री हुलेश मांझी, श्री अर्पण कुमार, श्री चोलसाय चेरवा, श्री रामकुमार, डॉ0 रविशंकर चौहान, श्री अजय कुमार एवं अतिथि व्याख्याता श्री कमलेश, श्री हमीसिंह, श्री रामसाय, श्री श्रवण कुमार, आशा किरण तथा बड़ी संख्या में महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं उपस्थित थे । कार्यक्रम का आभार प्रदर्शन महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा किया गया ।

बाल विवाह मुक्त भारत अभियान का हुआ शुभारंभ

बाल विवाह के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक लाने की जरूरत- कलेक्टर

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)- बाल विवाह मुक्त भारत राष्ट्रीय अभियान का शुभारंभ आज किया गया है। जिले में इससे सफ्ल क्रियान्वयन व सम्पादन हो इसके लिए कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में कलेक्टर श्री एस. जयवर्धन की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया था। इस बैठक का उद्देश्य बाल विवाह की रोकथाम और इसके दुष्परिणामों के प्रति समुदाय को जागरूक करना था। बाल विवाह से संबंधित कानून व रोकथाम के विषय पर जानकारी देने व चर्चा हेतु युनिसेफसे राज्य बाल संरक्षण विशेषज्ञ श्रीमती चेतना देसाई व राज्य सलाहकार श्री अभिषेक त्रिपाठी बैठक में उपस्थित हुए थे। बाल विवाह कुरूति पर अंकुश लगाने के लिए घटनाओं की प्रभावी रिपोर्टिंग व जागरूकता जैसे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर वृहद चर्चा की गई। कलेक्टर ने उपस्थित संबंधित अधिकारियों को योजनाबद्ध तरीके से युद्ध स्तर पर कार्य करने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिये। जिला शिक्षा अधिकारी को स्कूलों में जागरूकता कार्यक्रम कराने के लिए निर्देशित किया। इसके साथ ही उन्होने बाल विवाह की रोकथाम और इसके दुष्परिणामों के प्रति समुदाय को जागरूक करने की बात को प्राथमिकता देने की बात कहीं।

जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री रमेश साहू बताया कि बाल विवाह मुक्त भारत राष्ट्रीय अभियान के सफ्ल क्रियान्वयन के लिए जिले के सभी आंगनबाड़ी केंद्रों और ग्राम पंचायतों में विशेष बैठकें आयोजित होंगी। इन बैठकों के माध्यम से समुदाय को बाल विवाह के सामाजिक, शारीरिक और मानसिक दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, प्रचार-प्रसार के लिए दीवार लेखन और अन्य माध्यमों का भी उपयोग किया जाएगा।

जिला बाल संरक्षण अधिकारी श्री मनोज जायसवाल ने बताया कि अभियान को सफ्ल बनाने के लिए समाज के प्रमुख लोगों और पंचायत प्रतिनिधियों को इसमें शामिल करने की योजना है। बाल विवाह के खिलाफ जागरूकता बढ़ाने हेतु आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, सामाजिक संगठनों और पंचायतों के सहयोग से विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा।

जिला प्रशासन और महिला बाल विकास विभाग ने नागरिकों से अपील की है कि वे इस अभियान में सक्रिय रूप से भाग लें। उन्होंने कहा कि बाल विवाह केवल एक कानूनी अपराध नहीं है, बल्कि यह बच्चों के अधिकारों और भविष्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

बैठक में जिला शिक्षा अधिकारी श्री राम ललित पटेल,डी डी पंचायत श्री ऋषभ सिंह, सिविल सर्जन डॉ अजय मरकाम, यूनिसेफ़ के जिला समन्वयक श्री प्रथमेश मानेकर व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर गुरूवार 28 नवंबर 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

बीएचयू के कुलधिपति जस्टिस गिरधर मालवीय जी का जाना राष्ट्र की अपूरणीय क्षति

प्रोफ. बी आर गुप्ता

बी एच यू के संस्थापक भारत रत्न पंडित मदन मोहन मालवीय के पौत्र कुलाधिपति जस्टिस गिरधर मालवीय का जाना भारतवर्ष के लिए एक अपूर्ण क्षति है। उन्होंने प्रयागराज में 18 नवंबर, 2024 को अंतिम सांस ली थी। उनके पिता पंडित गोविंद मालवीय स्वतंत्रता सेनानी,शिक्षाविद, राष्ट्रभक्त और वरिष्ठ राजनेता थे । राष्ट्रीय एकता, अखंडता और सांप्रदायिक सद्भाव उन्हें अपने पिता पंडित मदन मोहन मालवीय से विरासत में मिली थी । अपने दादा और पिता की उसी विरासत को जस्टिस गिरधर मालवीय आजीवन संभाले रखे । जस्टिस मालवीय के मनोज मालवीय इकलौते पुत्र हैं, जो भारतीय पुलिस सेवा के पश्चिम बंगाल कैडर के वरिष्ठ अधिकारी रहे हैं तथा उनकी दीपाली प्रियदर्शी और रुचि भार्गव दो पुत्रीयाँ हैं । जस्टिस मालवीय की शिक्षा बेशेंट थियोसोफ्किल सोसायटी, वाराणसी में तथा 1957 में बी एच यू से एल एल बी की डिग्री प्राप्त किए थे । वह 1988 से 1998 तक इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायाधीश रहे। वर्ष 218 से वह बी एच यू के चांसलर थे । इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जैसे गौरवमयी पद पर रहने के बावजूद भी वह प्रयागराज की छोटी बड़ी तमाम संस्थाओं से जुड़े रहे, और उनके प्रत्येक भाषण में मां गंगा की सेवा, राष्ट्रभक्ति, समाज उत्थान, शिक्षा का प्रचार -प्रसार प्रमुखता से सुनने को मिलता था । जस्टिस गिरधर मालवीय का ज्यादा लगाव अपने दादा पंडित मदन मोहन मालवीय से था । उनका जन्म बीएचयू परिसर में ही अपने दादा पंडित मदन मोहन मालवीय के घर 14 नवंबर,1936 को हुआ था । वह भाव विभोर होकर कहा करते थे, बी एच यू मेरा घर है । एक बार बी एच यू आगमन पर अपने संस्मरणों को साझा करते हुए उन्होंने बताया था कि मेरे दादा पंडित मदन मोहन मालवीय प्राय: शाम को हम सबको मोटर कार से घूमने ले जाया करते थे । उन्हें वृक्षों से बहुत लगाव था । वह कहा करते थे कि वृक्ष ईश्वरीय देन हैं, आदमी इन्हें पैदा नहीं कर सकता । वह प्राय भ्रमण के दौरान गांव के लोगों के साथ बैठकर विश्व विद्यालय के विकास की बातचीत किया करते थे । पंडित गिरधर मालवीय सत्य,अहिंसा,व्यायाम, कर्तव्य निष्ठा एवं सनातनी स्वभाव के थे, लेकिन अन्य धर्मों का भी समान रूप से आदर किया करते थे । बी एच यू के एक प्रोफेसर के भर्ती के प्रसंग में जस्टिस मालवीय नें बड़ा रोचक और सराहनीय निर्णय सुनाया था ।बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के संस्कृत विद्या एवं धर्म विज्ञान संकाय में असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर डॉक्टर फिरोज खान की नियुक्ति वर्ष -2019 में हुई थी, लेकिन उनकी नियुक्ति को लेकर फैकल्टी के छात्र और कुछ शिक्षक आंदोलन कर रहे थे । उनका कहना था कि एक मुसलमान शिक्षक हम हिंदुओं को वेद - वेदांग और साहित्य कैसे पढ़ाएगा । इस समस्या का कोई उचित समाधान न देखकर तत्कालीन कुलपति ने जस्टिस मालवीय से इस मामले में सुझाव मांगा था । इस पर जस्टिस मालवीय ने कहा था कि, बच्चों को जहां से भी मिले शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए, उन्हें हिंदू -मुस्लिम ऐसा करके विरोध नहीं करना चाहिए । उन्होंने उदाहरण प्रस्तुत किया था कि भगवान राम शिक्षा प्राप्त करने के लिए लक्ष्मण को रावण के पास भेजा था । यदि डॉक्टर फिरोज खान की नियुक्ति सेलेक्शन कमेटी ने की है और उनको संस्कृत का विद्वान माना है तो, उनकी ज्वाइनिंग विभाग में होनी चाहिए। परंतु दुर्भाग्य रहा कि छात्रों के विरोध के आगे विश्वविद्यालय प्रशासन को झुकना पड़ा था और डॉक्टर फिरोज खान उस विभाग में ज्वाइन नही कर सके । उन्हें पुन: विज्ञप्ति निकाल कर बी एच यू के संस्कृत विभाग में ज्वाइन कराया गया । जस्टिस मालवीय गंगा सेवा के प्रति हमेशा प्रतिबद्ध रहा करते थे । उन्होंने वर्ष -2016 में 'भागीरथ संकल्प श्रम संघ' की स्थापना की थी । इस संस्था द्वारा प्रति वर्ष गंगा की सफाई के साथ साथ गंगा की स्वछता का सन्देश दिया जाता था । अपनी संस्था द्वारा प्रति वर्ष किये गये स्वछता कार्य की रिपोर्ट को वह स्वयं सुनते थे । इस वर्ष 332 वां स्वच्छता रिपोर्ट जब उन्हें सुनाई जा रही थी तो उन्होंने कहा कि गंगा का स्वच्छता अभियान तब तक चालू रखना चाहिए, जब तक कि गंगा का पानी आचमन योग्य न हो जाए ।'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी 'इस ध्येय वाक्य को हमेशा स्मरण करते हुए वह विश्वविद्यालय को स्वर्ग से भी महान मानते थे । उनका विश्वविद्यालय से बड़ा ही आत्मीय लगाव था । विश्वविद्यालय में उनका प्राय: आना-जाना होता रहता था । वर्ष -2019 में आयोजित बी एच यू के दीक्षांत समारोह

की उन्होंने अध्यक्षता की थी और 16 दिसंबर, 2023 को अस्वस्थ रहते हुए भी वह व्हीलचेयर पर बैठकर दीक्षांत समारोह में भाग लिये थे । दीक्षांत समारोह में बड़ी ही मुश्किल से वह अपने दोनों पैरों पर खड़े हो पाए और छात्रों को उनके जीवन का अनूठा मूल मंत्र समझाया था । उन्होंने विश्व विद्यालय के विद्यार्थियों को पुरातन आचार्यों की वाणी का अनुसरण, सत्य बोलने, धर्म का आचरण, स्वाध्याय में प्रमाद न करने, प्रजातंत्र का विच्छेद न करने, सत्य, धर्म, ईश्वर, स्वास्थ्य और स्वाध्याय में प्रमाद न करने, देव कार्य और पितृ कार्य में प्रमाद न करने, माता-पिता, आचार्य, अतिथि तथा राष्ट्र में देवभाव रखना, संदेह के समय विचारशील, अनाशक्त, सेवाभाव, कर्मप्राण और धर्माभिलाषी सज्जन के अनुरूप आचरण करने का संदेश दिया था ।वह बीएचयू में अंतिम बार वह 3 फरवरी, 2024 को लॉ कॉलेज के शताब्दी समारोह में बतौर पूर्व छात्र सम्मिलित हुए थे और उन्हें आनंद जी स्मृति शताब्दी सम्मान से सम्मानित किया गया था । उन्होंने आशा व्यक्त किया था कि बी एच यू का लॉ कॉलेज देश का सबसे बड़ा लॉ कॉलेज के रूप में स्थापित किया जाना चाहिए । भारतीय सूचना सेवा के वरिष्ठ अधिकारी प्रयागराज निवासी सुनील शुक्ला जस्टिस गिरधर मालवीय के संस्मरण का जिक्र करते हुए बताते हैं कि उनकी चिंता समाज के आखिरी पायदान पर बैठे हुये व्यक्ति की रहती थी। वह प्रयागराज की तमाम छोटी -बड़ी स्वयंसेवी संगठनों से जुड़े रहे और उनका मार्गदर्शन किया करते थे । गंगा को स्वच्छ रखना वह अपने जीवन का प्रमुख लक्ष्य मानते थे । वह अपने जीवन में अपने दादा पंडित मदन मोहन मालवीय को आदर्श मानते थे और बातों -बात में वह उनका उदाहरण देते और जिक्र किया करते थे । वर्ष - 2014 में जब नरेन्द्र मोदी वाराणसी से पहली बार लोक सभा का चुनाव लड़े थे, उसमे एक प्रस्तावक के रूप में जस्टिस मालवीय भी थे । उनके निधन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुख व्यक्त किया और कहा की गिरधर मालवीय के निधन से अत्यंत दुख हुआ है । गंगा सफाई अभियान में उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा । उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा की गिरधर मालवीय का निधन अत्यंत दुखद और शिक्षा जगत और देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है । उनके निधन से बीएचयू में शोक की लहर दौड़ पड़ी और कुलपति सुधीर जैन ने कहा कि महामना और बी एच यू के बीच जस्टिस मालवीय एक जीवित कड़ी थे । वह विश्वविद्यालय के अभिभावक के रूप में समय-समय पर हम सभी का मार्गदर्शन किया करते थे ।कुलपति नें उनके निधन को विश्वविद्यालय ही नहीं बल्कि निजी अपूरणीय क्षति बताया । जस्टिस गिरधर मालवीय अपने हृदय की महानता के कारण शिक्षा एवं न्याय जगत में हमेशा याद किए जाएंगे । उन्हें सत्य,दया,न्याय पर आधारित सनातन धर्म सर्वदा प्रिय था । करुणामयी हृदय, भूतानुकंपा,मनुष्य मात्र से द्वेष, शरीर,मन, वाणी में संयम, धर्म और देश के लिए सर्वस्व त्याग,उत्साह और धैर्य, नैराश्यपूर्ण परिस्थितियों में भी आत्मविश्वास पूर्वक दूसरों को असंभव प्रतीत होने वाले कर्मों का प्रतिपादन, वेश-भूषा और आचार- विचार उन्हें अपने दादा पंडित मदन मोहन मालवीय से विरासत में मिली थी । जस्टिस गिरधर मालवीय महामना की सांस्कृतिक विरासत, चाहे वह राष्ट्र प्रेम रहा हो, हिंदी भाषा, सनातनी विचार एवं शिक्षा के प्रति अटूट प्रेम एवं मूल्यों के सच्चे उत्तराधिकारी थे । उन्होंने अपने अंतिम दौर के समय एक साक्षात्कार में कहा था कि मुझे कोई बीमारी नहीं है, यह वृद्धावस्था है । इसका अंतिम इलाज 'मृत्यु 'है । उनके शुभचिंतक बताते हैं कि उनको अपने अंतिम समय में शरीर त्यागने का धीरे-धीरे आभास हो चला था,परंतु वह अपने राष्ट्र धर्म और उसकी प्रतिबद्धता से कभी विचलित नहीं हुए ।

बिना उचित इलाज के डायबिटीज झेल रहे लोग

यह अवश्य कहा जाएगा कि डायबिटीज जिस तेजी से फैली है, उसके अनुरूप चिकित्सा सुविधाएं फैलाने के तकाजे को नजरअंदाज किया गया है। इसीलिए वास्तविक संख्या के लिहाज से आज कहीं ज्यादा लोग बिना उचित इलाज के यह रोग झेल रहे हैं। दुनिया में तकरीबन 82 करोड़ 80 लाख लोग इस समय डायबिटीज के मरीज हैं। उनमें से लगभग एक चौथाई- यानी 21 करोड़ 20 लाख भारत में हैं। विश्व में 30 वर्ष से अधिक उम्र वाले लगभग साढ़े 44 करोड़ डायबिटीज मरीजों को उचित इलाज की सुविधा हासिल नहीं है। भारत में ऐसे लोगों की संख्या 13 करोड़ 30 लाख है। 1990 के बाद डायबिटीज मरीजों की संख्या चार गुना बढ़ी है। ऐसे मरीजों की संख्या साढ़े तीन गुना बढ़ी, जिन्हें उचित चिकित्सा उपलब्ध नहीं है। ये तथ्य ब्रिटिश स्वास्थ्य जर्नल द लासेंट के ताजा शोध पत्र से सामने आए हैं। इनके मद्देनजर यह अवश्य कहा जाएगा कि ये बीमारी जिस तेजी से फैली है, उसके अनुरूप चिकित्सा सुविधाएं फैलाने के तकाजे को नीति-निर्माताओं ने नजरअंदाज किया है। इसलिए वास्तविक संख्या के लिहाज से आज कहीं ज्यादा लोग बिना उचित इलाज के इस रोग को भुगत रहे हैं। दक्षिण एशिया में डायबिटीज सबसे तेजी से फैली है, यह जाना-पहचाना तथ्य है। यह ऐसी बीमारी है, जो कई बीमारियों की जड़ बनती है। उचित इलाज और मेडिकल सलाह ना मिले, तो धीरे-धीरे व्यक्ति की क्षमता को यह क्षीण करती जाती है। चेन्नई की स्मार्ट इंडिया नाम संस्था के 10 राज्यों में किए अध्ययन से सामने आया था कि बड़ी संख्या में डायबीटिज मरीज नजर कमजोर होने की समस्या से पीड़ित होते हैं। हाई ब्लडप्रेशर और उसके परिणामस्वरूप पक्षाघात होने जैसी समस्याओं की आशंका डायबिटीज मरीजों में काफी बढ़ जाती है। अच्छी बात है कि आज डायबिटीज की कारगर दवाएं उपलब्ध हैं। इनके अलावा स्वस्थकर भोजन एवं उचित व्यायाम से इसे नियंत्रित रखना संभव है। मगर समस्या नियमित मेडिकल जांच, दवाओं और उचित सलाह की उपलब्धता की है। चिकित्सा व्यवस्था के निजीकरण के साथ ये सुविधाएं इतनी महंगी हो गई हैं कि आम शख्स के लिए इन्हें हासिल करना कठिन हो गया है। उधर समृद्ध तबकों में उच्च उपभोग की जीवन शैली ने ऐसी बीमारियों की आशंका बढ़ाई है। द लासेंट जैसी पत्रिकाओं की तारीफ करनी होगी।

आलेख

कबूतरों की बीट रसायन स्वास्थ्य के लिए काफी खतरनाक है.....

भगवती प्रसाद डोभाल

हाल ही में कुछ अध्ययनों से चौंकाने वाले आंकड़े सामने आए हैं, जिनमें कबूतरों से खतरे की बात बताई गई है। इनमें नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टीबी एंड रेस्पिरेटरी डिजीज के डॉ. मीत घोनिया ने बताया कि कबूतर की बीट में साल्मोनेला, ई. कोली और इंफ्लूएंजा-जैसे रोगाणु होते हैं, जिनसे अस्थमा-जैसी गंभीर बीमारी हो सकती है। कहा है कि इन दिनों ऐसे मरीजों की संख्या बढ़ रही है, जो कबूतरों के संपर्क में रहे हैं। उसका कारण यही माना जा रहा है कि कबूतरों की बीट में जो रसायन पाया जाता है, वह स्वास्थ्य के लिए काफी खतरनाक है। डॉ. मीत ने बताया कि जब कबूतर एक जगह ज्यादा संख्या में होते हैं, तब उनकी बीट से क्रिप्टोकोकी जैसे फंगल बीजाणुओं के फैलने का खतरा बढ़ जाता है। यही बीजाणु हवा में अधिक मात्रा में होने के कारण व्यक्ति की सांस के माध्यम से फेफड़ों में चला जाता है। फिर सांस लेने में परेशानी हो जाती है। इस परेशानी से अस्थमा के मरीज बढ़ रहे हैं। यह एक ऐसा बीजाणु है, जो मनुष्य की जान लेने का कारण बनता है। गंभीर बीमारी टीबी के फैलने के खतरों को देखते हुए दिल्ली नगर निगम ने प्रस्ताव रखा है कि दिल्ली में कबूतरों की बढ़ती आबादी को रोकने के लिए कबूतरों को दाना देने वालों को रोका जाए। यह भी सुनिश्चित करने की कोशिश की जा रही है कि जहां-जहां दिल्ली शहर में कबूतरों को दाना डालने के स्थान लोगों ने बनाए हैं, उन्हें बंद किया जाए। एमसीडी द्वारा दाना डालने वाले स्थानों को रोकने से जनता खुश नहीं है। उसका कारण है लोगों की भावना। वे इन पक्षियों को जीवित रखना चाहते हैं। इतना ही नहीं, दाना देने वाली जगहों पर ऐसे व्यापारी भी बैठे होते हैं, जो कबूतरों के लिए दाना बिकवाते हैं; वे भी इस रोक से परेशान हैं, उनकी रोजी-रोटी पर असर पड़ रहा है। दिल्ली के कनाट प्लेस, बाराखंबा, मंडी हाउस, पटेल नगर, शंकर रोड, मंदिर मार्ग, कड़कडडूमा, करोल बाग और रोहतक रोड के कई इलाकों के चौक-चौराहों पर कबूतरों के लिए दानागाह हैं। इन स्थानों पर नागरिक दूर-दूर से कबूतरों को दाना देने आते हैं, और उनके लिए पीने के पानी का बंदोबस्त भी किया जाता है। देखा गया है कि अधिकांश पक्षियों की प्रजातियां दिल्ली से लुप्त होती जा रही हैं। गौरया को दिल्ली राज्य के पक्षी की मान्यता दी गई थी पर आज वह खोजने पर भी नहीं मिलती; लुप्त होने का कारण दिल्ली अब उसके रहने लायक नहीं रह गई। छोटे-छोटे स्थानों और पाकरे में वह अपनी संतति बढ़ाने के लिए घोसलों का निर्माण करती थी, लेकिन अब वे स्थान उसके लिए उपयुक्त नहीं रहे। साथ ही, भीड़ भरे स्थानों में गौरया का जीना दूभर हो गया है। ऐसे ही बहुत सारी प्रजातियां दिल्ली से लुप्त हो गई हैं। अब कबूतर ही दिल्ली में सर्वाइव कर रहे हैं क्योंकि वे बड़ी-बड़ी बहुमंजिली इमारतों में अपने घोसले बनाने का प्रयास करते हैं, छिपने का स्थान ढूंढ़ कर संतति बढ़ाते हैं। इसलिए कुछ स्थानों को छोड़ कर कबूतर दिख जाते हैं। वैसे कबूतर का मनुष्य से पुराना रिश्ता भी है। पुराने जमाने में वे ही संदेशवाहक का काम करते थे। राजा-महाराजाओं के संदेशों को पहुंचाने का इतिहास कबूतरों का ही रहा है। इससे पता चलता है कि वे अक्सर आदमियों के करीब ही रहना ज्यादा पसंद करते हैं, लेकिन आज देश की बढ़ती अबादी महानगरों में ही सिमटने को अपना भविष्य मानती है। इस कारण इको सिस्टम ही बदल रहा है। वैज्ञानिक उपलब्धि का फायदा मनुष्य तो ले रहा है पर पर्यावरण को दरकिनार कर नई-नई दुारियों को बुलावा भी दे रहा है। संतुलित विकास का समीकरण ही बदल गया है। इसके साथ ही नये-नये वायरस भी जन्म ले रहे हैं, उनकी वजह से पूरा विश्व ही परेशानियों से जूझ रहा है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण कोरोना काल है। मृत्यु का तांडव कोरोना काल में रहा। अब आप अपने आसपास के जीव- जंतुओं को ही मिटाना चाहते हैं। वैसे, शांति के प्रतीक कबूतरों से अगर वाकई मानव जीवन को खतरा है, तो इसका हल तलाशना भी वैज्ञानिकों के लिए जरूरी है। दिल्ली के चिकित्सकों ने भी कबूतरों के आवासों को मिटाने के लिए एमसीडी की योजना को सही माना है, और कबूतरों के पोषण के स्थानों को मिटाने का बिल लाया जा रहा है, लेकिन कबूतरों को संरक्षण देने में वन्य प्राणी संरक्षण अधिनियम, 1972 की धारा 9/51 काम कर सकती है। दिल्ली के प्रशासकों और वैज्ञानिकों को ऐसे अनुसंधान की ओर बढना चाहिए जिसमें फंगस, साल्मोनेला ई. कोली-जो कबूतरों को हमसे दूर करता जा रहा है-को मारने के लिए दवा का ईजाद किया जाना निहायत जरूरी है, ताकि हमारा एक प्रिय पक्षी हमसे दूर न होने पाए।

तकनीकी विकास और आधुनिकता के प्रभाव से जूझते बच्चे

राजेश मणि

वर्तमान युग में भारतीय समाज त्वरित गति से तकनीकी और सामाजिक बदलावों का सामना कर रहा है। तकनीकी विकास ने हमारे बच्चों के जीवन को जहां नये अवसर दिए हैं, वहीं कई संकटों को भी जन्म दिया है। आज के बच्चे, जो हर रोज स्मार्टफोन, इंटरनेट और अन्य डिजिटल उपकरणों का उपयोग करते हैं, अपनी मानसिकता, आदतों और जीवनशैली में तेजी से बदलाव महसूस कर रहे हैं। पिछले कुछ दशकों में भारत में इंटरनेट, स्मार्टफोन, कंप्यूटर और अन्य डिजिटल उपकरणों का उपयोग तेजी से बढ़ा है। शिक्षा से लेकर मनोरंजन तक, सब कुछ डिजिटल हो गया है। ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल गेमिंग, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स और वीडियोग्राफी जैसे अत्याधुनिक साधन बच्चों की सोच, आदतें और जीवनशैली को आकार दे रहे हैं। बच्चों का अधिकांश समय स्मार्टफोन, टैबलेट, और कंप्यूटर पर बीतता है। परिणामस्वरूप बच्चों में शारीरिक गतिविधियों की कमी हो रही है। शारीरिक निष्क्रियता से मोटापा, हड्डियों की कमजोरी और स्वास्थ्य संबंधी अन्य समस्याएं बढ़ रही हैं। लंबे समय तक स्क्रीन पर ध्यान केंद्रित करने से उनकी आंखों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है और आंखों की रोशनी में भी गिरावट आ रही है। मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित हो रहा है। बच्चों को साइबरबुलिंग, पोर्नोग्राफी, और असामाजिक सामग्री का सामना करना पड़ रहा है, जो उनके मानसिक विकास को नुकसान पहुंचाता है। सोशल मीडिया पर खुद को दूसरों से बेहतर साबित करने का दबाव भी बच्चों को तनाव और अवसाद की ओर धकेल रहा है। तकनीकी विकास ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को पूरी तरह बदल दिया है। ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल उपकरणों का बढ़ता उपयोग बच्चों को नई पद्धतियों से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दे रहा है। इंटरनेट ने जहां बच्चों को दुनिया भर की जानकारी से परिचित कराया है, वहीं यह पारंपरिक शिक्षा की आदतों और मूल्यों से भी उन्हें दूर कर रहा है। बच्चों को खुद से पढ़ाई करने और स्वाध्याय की आदत डालने की बजाय वे अब इंटरनेट और तकनीकी उपकरणों पर निर्भर हो गए हैं। साथ ही, शिक्षा में नैतिक और सामाजिक शिक्षा की कमी भी महसूस हो रही है। आजकल के बच्चे भले ही तकनीकी दृष्टि से बेहद प्रगति कर गए हैं, लेकिन उनके भीतर मानवीय मूल्यों, नैतिक शिक्षा और पारिवारिक संबंधों की अहमियत धीरे-धीरे कम हो रही है। यह स्थिति बच्चों को मानसिक और सामाजिक दृष्टिकोण से कमजोर बना रही है। भारत में पारंपरिक रूप से बच्चों से उच्च शिक्षा की उम्मीदें बहुत अधिक होती हैं। माता-पिता और समाज बच्चों से उम्मीद करते हैं कि वे हमेशा सर्वोत्तम परिणाम देंगे, जो मानसिक दबाव का कारण बन सकता है। बच्चों को अपनी पहचान बनाने में भी कठिनाई हो रही है, क्योंकि वे समाज के मानकों में बंध कर जीने की कोशिश करते हैं। यह दबाव न उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर डालता है, बल्कि उनका आत्मविश्वास भी डगमगा सकता है। इसके अलावा, आजकल परिवारों में माता-पिता की व्यस्त जीवनशैली के कारण बच्चों को पर्याप्त समय और ध्यान नहीं मिल पाता। परिणाम यह होता है कि बच्चे अपने माता-पिता से मानसिक और भावनात्मक सहायता प्राप्त नहीं कर पाते और इस स्थिति में उनका मानसिक विकास बाधित हो सकता है। इस संकट से उबरने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण कदम उठाने होंगे- संतुलित जीवनशैली- बच्चों को तकनीकी उपकरणों का उपयोग सीमित करना चाहिए। शारीरिक गतिविधियों, खेलकूद और परिवार के साथ समय बिताने का अवसर मिलना चाहिए। संतुलित जीवनशैली बच्चों को मानसिक-शारीरिक रूप से स्वस्थ बनाए रखने में मदद करती है। आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा- बच्चों को तकनीकी ज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिक शिक्षा और मानवता के मूल्यों की भी शिक्षा दी जानी चाहिए। इससे बच्चों का मानसिक-सामाजिक विकास संतुलित रूप से हो सकता है। पारिवारिक समर्थन- बच्चों को अपने परिवार से मानसिक-भावनात्मक समर्थन की आवश्यकता होती है। माता-पिता को बच्चों के साथ समय बिताना चाहिए, उन्हें समझने और उनकी समस्याओं का हल निकालने में मदद करनी चाहिए। मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल- बच्चों को मानसिक स्वास्थ्य के महत्त्व के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। बच्चे किसी प्रकार के मानसिक तनाव या अवसाद से जूझ रहे हैं, तो उन्हें काउंसलिंग और उचित मानसिक उपचार की सुविधा उपलब्ध करानी चाहिए। शिक्षा में सुधार- पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। बच्चों को आधुनिक ज्ञान के साथ-साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक मूल्यों की भी शिक्षा दी जानी चाहिए। सरकार भी अपने तरीकों से हस्तक्षेप करने का प्रयास किया है भारत सरकार, प्रदेश सरकारें समय- समय पर जागरूकता अभियान और दिशा-निर्देश जारी कर रहे हैं। भारत सरकार के गृह मंत्रालय ने साइबर सुरक्षा पर किशोरों/छात्रों के लिए पुस्तिका भी बनाई है। सुप्रीम कोर्ट ने भी हाल में चाइल्ड पोर्नोग्राफी पर बड़ा फैसला दिया है। कोर्ट ने साफ कर दिया कि चाइल्ड पोर्न देखना या उसे स्टोर करके रखना भी पास्को और आईटी कानून के तहत अपराध है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि पास्को एक्ट की धारा 15 के अनुसार चाइल्ड पोर्न देखना, रखना, प्रकाशित करना या उसे प्रसारित करना अपराध है। सुप्रीम कोर्ट ने कुछ सुझाव भी दिया। कहा कि अदालतों को अपने फैसले में चाइल्ड पोर्नोग्राफी शब्द की जगह चाइल्ड सेक्सुअल एक्सप्लाटेटिव मैटेरिअल का इस्तेमाल करना चाहिए। सही मायने में %बाल दिवस' का स्वरूप तब दिखेगा जब हम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सपने जीरो टॉलरेंस की नीति पर चलें। बच्चों के प्रति कोई हिंसा न हो। बाल श्रम, बाल तस्करी, बाल यौन शोषण, बाल विवाह इस सभी चीजों से आजादी हो। भारत में आज के बच्चे तकनीकी विकास और आधुनिकता के प्रभाव से जूझ रहे हैं।

विश्व में भारत की साख बढ़ाने की मोदी प्रतिबद्धता

राजेन्द्र शर्मा

अब तक विदेशों में कुल 19 बार प्रधानमंत्री मोदी को सम्मानित किया जा चुका है, जिनमें महाशक्ति कहे जाने वाले देश रूस और अमेरिका के अलावा मालदीव, फ्लिस्तीन, इजिप्ट, बहरीन और युएई जैसे मुस्लिम राष्ट्र भी शामिल हैं। दुनिया में भारत एवं भारतीय लोकतंत्र का गौरव एवं सम्मान दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है, पिछले 10 साल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक विश्व नेता बनकर उभरे हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनका रुतबा लगातार बढ़ा है। विदेशी धरती से मिलने वाले सर्वोच्च नागरिक सम्मानों की एक लम्बी श्रृंखला इस बात का प्रमाण हैं कि प्रधानमंत्री मोदी की छवि वैश्विक स्तर पर सर्वमान्य नेता के तौर पर स्थापित हुई है और उनकी सोच, नीतियों एवं कार्यक्रमों को विश्व स्तर पर मान्यता मिल रही है। यह भारत के लिये गर्व की बात है। इसी श्रृंखला में अपनी तीन देशों की यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी को डोमिनिका और गुयाना के सर्वोच्च नागरिक सम्मान और नाइजीरिया का दूसरा सबसे बड़ा नागरिक सम्मान मिला है। प्रधानमंत्री मोदी हाल ही में ब्राजील में जी 20 समिट की बैठक के लिए पहुंचे थे और इसके बाद 3 कैरेबियन देशों की यात्रा पर है। कोरोना काल में मानवीय दृष्टि से मदद का हाथ बढ़ाने के लिए डोमिनिका ने प्रधानमंत्री मोदी को 'डोमिनिका अवॉर्ड ऑफ ऑनर' और गुयाना ने 'ऑर्डर ऑफ एक्सीलेंस' से नवाजा। भारत के लिये सौभाग्य की बात है कि नरेन्द्र मोदी जैसा महानायक प्रधानमंत्री के रूप में मिला है। वैसे तो दस वर्षों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को कई देशों ने अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित किया है लेकिन इसी सप्ताह उनकी डोमिनिका, गुयाना और नाइजीरिया यात्रा के दौरान उन्हें जो सर्वोच्च सम्मान मिले हैं, वह हर भारतीय को अभिभूत एवं गौरवान्वित कर देने वाले हैं। ये सम्मान उनके व्यापक सोच, मानवीय दृष्टिकोण, कुशल राजनीतिक नेतृत्व और दूरदृष्टि का प्रतिबिम्ब है जिसने वैश्विक मंच पर भारत के उदय एवं उसकी साख को मजबूत किया है। ये सम्मान दुनिया भर के देशों के साथ भारत के बढ़ते संबंधों को भी दर्शाता है। प्रधानमंत्री मोदी ने जिस कुशलता, परिपक्वता एवं दूरदर्शिता से देश का समग्र विकास करते हुए दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थ-व्यवस्था बनाने की ओर अग्रसर किया, इससे पूरा देश तो आत्मविश्वास से भर ही उठा बल्कि पूरी दुनिया में भारत को लेकर सकारात्मकता, उम्मीदें और भरोसा बढ़ा है। अब तक

विदेशों में कुल 19 बार प्रधानमंत्री मोदी को सम्मानित किया जा चुका है, जिनमें महाशक्ति कहे जाने वाले देश रूस और अमेरिका के अलावा मालदीव, फ्लिस्तीन, इजिप्ट, बहरीन और युएई जैसे मुस्लिम राष्ट्र भी शामिल हैं। इसके साथ ही सबसे ज्यादा बार विदेशी संसद को संबोधित करने का रिकॉर्ड भी मोदी के नाम ही है। मोदी आश्चर्यों की वर्णमाला से गूंथित ऐसा व्यक्तित्व है जिसने अपने हर कीर्तिमान से भारत का मस्तक ऊंचा किया है। ऑस्ट्रेलिया और ब्रिटेन के पार्लियामेंट को भी प्रधानमंत्री मोदी संबोधित कर चुके हैं। मोदी ने 14 बार विदेशी संसद में वहां के सांसदों को संबोधित किया। अमेरिका में मोदी ने दो बार संसद को संबोधित किया है। इसके साथ ही ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, फिजी, मॉरिशस, युगांडा, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, मंगोलिया, अफगानिस्तान और मालदीव की संसद को भी प्रधानमंत्री मोदी ने संबोधित किया है। इससे पहले प्रधानमंत्री रहते हुए मनमोहन सिंह ने 7 बार, इंदिरा गांधी ने 4 बार, जवाहरलाल नेहरू ने 3 बार, जबकि मोरारजी देसाई और पीवी नरसिम्हा राव ने 1-1 बार विदेशी संसदों में संबोधन दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जब पापुआ न्यू गिनी पहुंचे थे तो सारे शासकीय प्रोटोकाल को तोड़ कर उस देश के प्रधानमंत्री जेम्स मारापे ने न केवल मोदी का स्वागत किया साथ ही एयरपोर्ट पर सबके सामने मोदी के पांव भी छूए। यह अपने आप में अभूतपूर्व है कि विश्व के इतिहास में आज तक कभी भी किसी राष्ट्राध्यक्ष ने किसी दूसरे राष्ट्राध्यक्ष के पांव सार्वजनिक रूप से नहीं छूए हो। भारत की जनता ने महानायक मोदी को एक नए भारत के शिल्पकार के रूप में देखा। मोदी की हर देश की यात्रा ऐतिहासिक एवं अविस्मरणीय बनी है। बात चाहे अमेरिका यात्रा की हो, वहां राष्ट्रपति जो बाइडेन मोदी गले तो मिले ही साथ ही बाइडेन का यह कहना अपने आप में अद्भुत है कि ''आप तो अद्भुत लोकप्रिय हो। मुझे तो आपके आटोग्राफ लेने चाहिए।'' आस्ट्रेलिया के सिडनी में जिस तरह से पूरा स्टेडियम वहां बसे भारतीयों ने ठसाठस भर दिया और पूरा स्टेडियम मोदी-मोदी के नारों से गुंजायमान हो उठा। उसे देखकर तो आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथोनी अल्बानीस भी हैरान रह गए। दुनिया के बड़े नेता जहां मोदी को सर आंखों पर बैठा रहे हैं, वहीं भारत में मोदी की लगातार बढ़ती साख एवं सम्मान से समूचा विपक्ष बौखलाया हुआ है। मोदी का जितना विरोध किया जा रहा है, उतनी ही उनकी प्रतिष्ठा एवं जनस्वीकार्यता बढ़ती जा रही है। एक तरह से विरोध उनके लिये वरदान बन रहा है। इस युगनायक पर कीचड़ उछालने की जिस तरह की हरकतें की गई, वर्तमान में वे पराकाष्ठा तक पहुंच गयी है।

जो व्यक्ति वस्तु के वास्तविक स्वरुप को जान लेता है वह कभी भी अहंकार नहीं करता : मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज

इंदौर (विश्व परिवार)। काल्पनिक छवि को ही वास्तविक छवि मानना ही अहंकार है, जो व्यक्ति वस्तु के वास्तविक स्वरुप को जान लेता है वह कभी भी अहंकार नहीं करता। उपरोक्त उदगार संत शिरोमणि आचार्य गुरुदेव विद्यासागरजी महामुनिराज के परम प्रभावक शिष्य भावनायोग प्रणेता मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज ने नेमीनगर में प्रात:कालीन धर्म सभा में व्यक्त किये।

मुनि श्री ने कहा कि संसार के सभी सम्वंध निमित्त और नैमेत्तिक है आज है, कल रहे न रहे? इसमें कैसाअहंकार? प्रशस्त भाव से यदि किसी कार्य को करोगे तो आपके अंदर अहंकार नहीं होगा। मुनि श्री ने कहा जब जब मन में कर्तित्व, भोक्तृत्व और स्वामित्व का भाव उत्पन्न होता है, तो अहंकारआता है, में बहुत सुंदर हुं, मेंबहुत बड़ा आदमी हुं, में समाज का अध्यक्ष हुं, में मंत्री हुं, मैं बहुत अच्छा बक्ता हूं? यह जो विशेषण लगता है यह मात्र ऊपर की पर्याय है, कोई छोटा नहीं, कोई बड़ा नहीं, आज है कल रहे न रहे यह जो हमने काल्पनिक छवि और विशेषण को बास्तविक छवि मान कर जी रहे है यही तो अहंकार है जो हमारे जीवन को निस्तेज बनाता है।उन्होंने नेमीनगर की तारीफ करते हुये कहा कि आचार्य गुरुदेव यंहा 21 दिन रहे और मुझे भी लगभग तीन दिन हो गये कल रात सपने में गुरुदेव आऐ और उन्होंने यंहा पत्थर का जिनालय बनाने का आशीर्वाद दिया और सपना टुट गया खैर सपना तो सपना है मेरेअबचेतन मन में गुरुदेव की वह बात आ गयी होगी जो उन्होंने यंहा कही थी। मुनि श्री ने कहा कि यंहा का बातावरण बहूत ही प्रसस्त है सभी लोग आसपास ही रहते हैं और एक आबाज में इकट्ठे हो जाते है, उन्होंने कहा कि समूह में रहोगे तो सभी लोग चमकते रहोगे और यदि अपने आपको विशेष मानोगे तो अंगीठी के अंगार के समान छिटककर राख बन जाओगे, जैसे अंगीठी में रखे अंगार जब तक अंगीठी में है चमकते रहते है और यदि उनमें से कोई अंगार छिटक कर बाहर निकल जाऐ तो वह थोढ़ी ही देर में अपनी चमक को खोकर निस्तेज हो राख बन जाता है। मुनि श्री ने कहा कि काल्पनिक छवि को बास्तविक मानना तथा कर्तित्व भोक्तृत्व और स्वामित्व की भावना को अपने अंदर जगाये रखना ही अहंकार है, काल्पनिक छवि से अपने आपको बाहर निकालिये तथा अपने आपको किसी भी कार्य का एक मात्र निमित्त मानो संसार के सभी सम्वंध निमित्त और नैमेत्तिक है, यह जीवन भी पानी के बुलबुले के समान है कब इसकी हबा निकल जाऐ इसका कोई ठिकाना नहीं? एक बंद आंख का सपना है, दूसरा खुली आंख का सपना है, उस सपना को अपना मत मानो जीवन तो उस कागज के समान है जो पुण्य की हबा चलती है तो वह कागज शिखर पर पहुच जाता है और पाप की हबा आते ही वह गटर में पहुंच जाता है। उन्होंने जैन नगर, गुमास्ता नगर, वैशाली नगर के सभी श्रद्धालुओं को आशीर्वाद देते हुये कहा कि जो दिख रहा है यह मात्र ऊपर की पर्याय है कोई छोटा नहीं कोई बड़ा नहीं विशेषण ही अहंकार को जन्म देता है। कर्तित्व भोक्तृत्व और स्वामित्व की भावना से बाहर निकल कर एक मात्र अपने आपको निमित्त मानिये। इस अवसर पर मुनि श्री निर्वेग सागर महाराज एवं मुनि श्री संधान सागर महाराज समस्त छुल्लक जी सहित मंचासीन रहे उपरोक्त जानकारी देते हुये प्रवक्ता अविनाश जैन ने बताया मुनिसंघ नेमीनगर में विराजमान है। प्रात:5:30 से आचार्य भक्ती 6:30 बजे से भावनायोग तत्पश्चात भगवान का अभिषेक तथा शांतिधारा 8:30 से प्रवचन 10 बजे से आहार चर्या दौपहर 3 बजे से समयसार का स्वाध्याय एवं 5:45 से विश्वप्रसिद्ध शंकासमाधान का कार्यक्रम संपन्न हो रहा है। नेमीनगर के कैलाश लोहाड़िया, इंद्र कुमार सेठी, गिरीश पाटोदी, संदीप गंगवाल सहित कार्यक्रम में धर्म प्रभावना समिति के अध्यक्ष अशोक डोसी, नवीन गोधा, महामंत्री हर्ष जैन मीडिया प्रभारी राहुल जैन सहित नेमीनगर, गुमास्ता नगर, वैशाली नगर सहित श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित थे। -**अविनाश जैन**

दिगंबराचार्य विशुद्धसागर जी महाराज एवं श्रुतसंवेगी आदित्य सागर जी महाराज पूरे 365 दिन विश्व में प्रवाहीत कर रहे हैं ज्ञान की गंगा

नांदणी (विश्व परिवार)। जयदु जिणिंदो महावीरों। भारत सहित पुरे विश्व में अपने प्रवचन के माध्यम से जैन दिगंबराचार्य विशुद्धसागर जी महाराज एवं मुनि श्री आदित्यसागर महाराज जी इन दोनों का एक ऐसा नाम हुआ हैं, जिनकी लोकप्रियता दिनों-दिन बढ़ती ही जा रही है। अखबारों मे हो या फिर सोशल मीडिया का प्लेटफार्म, हर जगह आचार्य विशुद्धसागर जी महाराज एवं मुनि श्री आदित्यसागर महाराज जी का जिक्र होता हुआ मिल जाएगा। उनके प्रवचन में जहां सैकड़ों-हजारों श्रावक-श्राविकाओं की भीड़ होती है। तो वहीं सोशल मीडिया पर उन्हें फॉलो करने वाले भक्तों की संख्या लाखों में पहुंची है। उसका यह कारण है की उनमें वह सभी योग्यता है, जो एक मोटिवेशनल प्रवचनकार को आम लोगों के बीच में लोकप्रिय बनाती है। दिगंबराचार्य विशुद्धसागर जी महाराज एवं श्रुतसंवेगी आदित्य सागर जी महाराज (गुरू-शिष्य) जो 24म7, 365 दिन पुरे विश्व में ज्ञान की गंगा प्रवाहीत कर रहे है।

चर्या शिरोमणी आचार्य भगवन विशुद्धसागर महाराज जी के अनमोल रत्न श्रुतसंवेगी श्रमण श्री आदित्यसागर जी महाराज जी के प्रवचन सोशल मीडिया पे देखकर-सुनकर मैं बहोत ही प्रभावीत होता था। और उस व्हिडीओ को व्हाट्सअँप स्टेटस और इंस्टाग्राम स्टोरी पर लागाता था। मुझे आदित्यसागर महाराज जी कौन से संघ में है, उनका चातुर्मास और उनका विहार कहा हो रहा है यह कुछ भी पता नही था। चर्या शिरोमणी आचार्य विशुद्ध सागर महाराज जी ससंघ का नांदणी (महाराष्ट्र) में चातुर्मास प्रारंभ हुआ तब में हररोज आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज जी के प्रवचन लिखकर के वर्तमानपत्र और जैन मॅगझीन में प्रसिद्ध करना प्रारंभ किया।

आचार्य श्री के ग्रंथ पढना शुरु किया तब मूझे ज्ञात हुआ की आचार्य भगवन विशुद्धसागर महाराज जी के अनमोल रत्न है श्रुतसंवेगी श्रमण श्री आदित्यसागर जी महाराज। जीन आचार्य भगवन विशुद्ध सागर महाराज जी की चर्या और विशाल संघ देखकर में प्रभावीत हुआ था और जीन आदित्य सागर जी मुनीराज के वचनों को सुनकर के मूझे मोटीवेशन मिलता है, वो दोनों गुरू-शिष्य है यह जानकर मूझे बहुत प्रसन्नता हुई।

आप दोनों गुरू- शिष्य जीवन की सच्चाई/फॅक्ट बताते हो। इस वजह से युवा वर्ग बहोत ही इन्स्पायर होते हैं। मैं आचार्य विशुद्ध सागर महाराज जी को वर्तमान के महावीर स्वामी और आदित्य सागर महाराज जी आपको वर्तमान के गौतम गणधर स्वामी मानता हूं।

मेरा हमेशा यही प्रयास रहेगा की जब तक मूझे साध्य होगा तब तक मैं आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज जी और आदित्यसागर महाराज जी के प्रवचन लिखकर के लाखो श्रावक-श्राविकाओं तक पहूँचाकर जीन धर्म की प्रभावना करुं। गुरुवर आपका आशीर्वाद हमेशा हम सभी को मिलता रहे। आपके चरणो में कोटी कोटी नमन।

श्रुतसंवेगी आदित्य सागर महाराज जी नें अपने प्रवचन में कहा की सज्जन लोगों के शब्द, भाव, स्वभाव और काम सज्जनता से भरे होते हैं। दुर्जन लोगों के शब्द, भाव, स्वभाव और काम दुर्जनता से भरे होते हैं। सही बात है अच्छे लोगों को बुरे काम और बुरे लोगों को अच्छे काम कभी पसंद नहीं आते। किसी भी व्यक्ती को उसके कद, उसकी उम्र, या उसकी वर्तमान स्थिती से कभी मत आंकना, कई बार बडे व्यक्तित्व को पहचाननें में चुकना आपके जीवन की सबसे बडी गलती हो सकती है। सही बात है- बड़े व्यक्तित्व को पहचानना बहुत कठिन काम है। -**अभिषेक अशोक पाटील**

हाथ छोटे हो सकते हैं, हिम्मत छोटी नहीं हो सकती : आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महाराज

नागपुर/औरंगाबाद (विश्व परिवार)। हाथ छोटे हो सकते हैं, पर हिम्मत छोटी नहीं हो सकती। यह उद्धगार भारत गौरव अंतर्मना तपाचार्य प्रसन्नसागर ने श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन खंडेलवाल मंदिर, जूनी शुक्रवारी में व्यक्त किए।

अंतर्मना तपाचार्य प्रसन्नसागर के चतुर्विध संघ की अगवानी मंगलवार को हुई। बैद्यनाथ चौक से निकलकर ऊंटखाना चौक, सम्राट अशोक चौक से होते हुए श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन खंडेलवाल मंदिर, जूनी शुक्रवारी में बाजे-गाजे के साथ प्रवेश हुआ। सान्निध्य क्षुल्लिकारत्न विस्मिताश्री एवं विगम्या श्री माताजी का रहा। आचार्य प्रसन्नसागर महाराज के संघ सान्निध्य एवं सौम्यमूर्ति उपाध्याय मुनिश्री पीयूषसागर महाराज के कुशल निर्देशन में आगे का मंगल प्रवास चल रहा है। तपाचार्य प्रसन्नसागर जी के चतूरविध संघ साथ प्रवेश हुआ। आचार्य प्रसन्नसागर ने कहा कि आचार्य के चरण मिल गए, तो चारों धाम मिल गए। मौत कभी भी आ सकती, कोरोना का कोई भरोसा नहीं कभी भी रुक सकती है। जैन कुल में जनम लेना सरल है पर जैन होकर मरना बहुत कठिन है। जैसा करम करोगे वैसा भोगना ही पड़ेगा। में कितने खो गए। पत्नी का संबध घर की चौखट तक, दोस्त का संबध चिता पर लिटाने तक और पुत्र का संबध अग्नि लगाने तक रहता है, बाकी सब धरा का धरा पर ही रह जाता है।

सहजसागर महाराज ने कहा कि 2015 के चातुर्मास में भी नागपुर में पारसनाथ भगवान की आराधना में रत थे। आज फिर से उन्होंने बुलाया तो हम हाजिर हो गए। क्षुल्लिकारत्न विस्मिता श्री माताजी ने बताया कि वैराग्य में आचार्य प्रसन्नसागर जैसे प्रेरणास्त्रोत रहे। बुधवार, 27 नवंबर को सुबह जिनाभिषेक नागदा मंदिर आदि की देव वंदना, दोपहर 3.30 बजे सदर में मंगल प्रवेश। शाम 6.15 बजे गुरु भक्ति, आनंद यात्रा, मंगल आरती आदि होंगे। खंडेलवाल मंदिर के अध्यक्ष राकेश पाटनी, मंत्री नरेश कासलीवाल, संयोजक पंकज बोहरा एवं संयोजिका रेखा बडजात्या ने उपस्थिति की अपील की है। यह जानकारी प्रचार प्रसार प्रमुख हीराचंद मिश्रीकोटकर ने दी।

-**नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल**

पंचकल्याणक महोत्सव बानपुर, तृतीय दिन : श्रद्धा पूर्वक मनाया तपकल्याणक, उमड़े श्रद्धालु

नीलांजना का नृत्य देख ऋषभदेव को हुआ संसार से वैराग्य, हुई दीक्षा विधि ● अपने रूप को नहीं चारित्र को चमकाओ : मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज

ललितपुर (विश्व परिवार)। शांतिनाथ अतिशय क्षेत्र बानपुर में आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य श्रमण मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज, श्रमण मुनि श्री प्रणतसागर जी महाराज, आर्यिका श्री विजिज्ञासामती माता जी ससंघ के सान्निध्य में चल रहे श्री आदिनाथ श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में 27 नवंबर बुधवार को तपकल्याणक महोत्सव अगाध श्रद्धा के साथ मनाया गया।

दीक्षाकल्याणक विधि विधान के साथ आयोजित हुआ जिसमें सर्वप्रथम प्रात: 6.30 बजे से अभिषेक, शांतिधारा, जन्मकल्याणक पूजन, हवन आदि पंचकल्याणक महोत्सव के पात्र माता- पिता वीरेंद्र कुमार जैन, सौधर्म इंद्र सुनील कुमार- प्रीति सुंदरपुर, कुबेरइंद्र इन्द्रकुमारजैन - आरती बानपुर, महायज्ञनायक नितिन जैन- नम्रता जैन टीकमगढ़, यज्ञनायक रवींद्र कुमार- शोभा बानपुर, ईशान इंद्र राजेश जैन- राजुल सिंघई बानपुर, सानतइंद्र सुनील कुमार-आभा सिंघई बानपुर, माहेंन्द्र इन्द्र सुनील जैन- ममता सिंघई बानपुर, लांतवइंद्र पवन जैन- साधना सिंघई बानपुर, ध्वजारोहण कर्ता नायक देवेंद्र कुमार जैन आदि ने श्रद्धा भक्ति के साथ गया। इस मौके पर समाज श्रेष्ठी जनों

द्वारा मुनिश्री का पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट किया गया। दीप प्रज्वलन अतिथियों द्वारा किया गया।

प्रात: 9 बजे आध्यात्मिक संत, मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज ने अपनी दिव्य देशना में सम्बोधित करते हुए कहा कि चमकते शरीर को पाकर अभिमान मत करना, यह क्षण भंगुर है, अपने चारित्र को चमकाना। पाषाण में संस्कार दे दिए जायं तो तीर्थ बन जाते हैं और इंसान को संस्कार दे दिए जाएं तो तीर्थंकर बन जाते हैं। उन्होंने कहा कि दिखावे, प्रदर्शन और मठाधीश बनने के लिए कभी भी संत, साधु मत बनना, निज को देखने के लिए संत, मुनि बनना। संसार का सुख-दु:ख कर्म के रूप में है। जब वैराग्य आता है तो संसार के सारे सुख नश्वर होते हैं। जैसे आज आपने देखा आदिनाथ को कैसे संसार से वैराग्य हो गया। उनके पास संसार के सारे वैभव हैं लेकिन जब उन्हें वैराग्य आया तो सारे वैभव को त्याग कर दिगंबरत्व को धारण करते हैं। संसार का यह रूप, सम्पदा क्षणिक है, अस्थिर है, किन्तु आत्मा का रूप आलौकिक है, आत्मा की संपदा अनंत अक्षय है। दोपहर में महाराजा नाभिराय का दरबार लगाया गया, जिसमें आदिकुमार का राज्याभिषेक, राजतिलक, राज्य व्यवस्था, 32 मुकुटबद्ध राजाओं द्वारा भेंट समरोण, ब्राह्मी-सुंदरी को शिक्षा एवं असि, मसि, कृषि, विद्या आदि षट्कर्म, दंडनीति को महोत्सव के पात्रों द्वारा दर्शाया गया।

नीलांजना का नृत्य देखकर आदिनाथ को वैराग्य की उत्पत्ति हो जाती है, लौकांतिक देवों द्वारा स्तवन और दीक्षा वन प्रस्थान को देखकर श्रद्धालु भाव-विभोर हो उठते हैं। युवराज भरत बाहुबली व बाहुबली राज्य तिलक दीक्षा अभिषेक दीक्षा वन आगमन, दीक्षा कल्याणक संस्कार विधि की गई। आर्यिका विजिज्ञासामती माता जी ने अपने सम्बोधन में संसार की असारता बताते हुए जीवन को क्षणभंगुर बताया।

आयोजन को सफल बनाने में महोत्सव की आयोजन समिति व सकल जैन समाज, विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों का उल्लेखनीय योगदान रहा।इस दौरान सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। विधि विधान की क्रियाएं ब्र. साकेत भैया के मार्गदर्शन में प्रतिष्ठाचार्य पंडित मुकेश शास्त्री गुड़गांव, प्रतिष्ठाचार्य पंडित अखिलेश शास्त्री ने संपन्न कराई। -**सुनील जैन**

कृषि विश्वविद्यालय के स्टार्टअप के उत्पाद जापान और अन्य एशियाई देशों में बिकेंगे

जापान के औद्योगिक समूह के साथ हुआ अनुबंध

रायपुर (विश्व परिवार)। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर में संचालित एग्री बिजनेस इन्क्यूबेशन सेन्टर, (राबी) के स्टार्टअप 'उर्वरक इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड' एवं 'कोनोइके ग्रुप, जापान' के बीच आज यहां एक एम.ओ.यू. हस्ताक्षर समारोह का आयोजन किया गया। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल की उपस्थिति में उर्वरक इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक अनिल पासरी एवं कोनोइके ग्रुप के महाप्रबंधक कात्सुफुमि ओत्सुकी ने एम.ओ.यू. में हस्ताक्षर किये। इस अवसर पर कोनोइके ग्रुप सीनियर बिजनेस डेवलपमेंट मैनेजर हीरोशी सोएजिमा, कार्यकारी अधिकारी तोशिहिरो फुजिवारा और उनकी टीम सहित इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के संचालक एवं निदेशकगण तथा कृषि महाविद्यालय, रायपुर के अधिष्ठाता एवं एग्री बिजनेस इन्क्यूबेशन सेन्टर के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. हुलास पाठक एवं उद्योगपति उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि इस अनुबंध के तहत छत्तीसगढ़ के स्टार्टअप 'उर्वरक इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड' द्वारा उत्पादित 'सॉइल कंडीशनर' एवं अन्य उत्पादों को जापान और अन्य उपमहाद्वीपों के देशों में विक्रय किया जा सकेगा। उर्वरक इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड द्वारा स्टील स्लैग से एक अभिनव उत्पाद, सॉइल कंडीशनर विकसित किया है, जिसमें 13 प्रमुख सूक्ष्म पोषक तत्व हैं। यह उत्पाद फसल उत्पादन में वृद्धि करता है और किसानों की आय को बढ़ाता है।

एमओयू समारोह को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल ने स्टार्टअप को बधाई दी और जापानी प्रतिनिधियों के साथ इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के स्टार्टअप इकोसिस्टम को साझा किया। उन्होंने भविष्य में और अन्य स्टार्टअप्स के साथ साझेदारी करने का स्वागत किया, ताकि वैश्विक स्तर पर विकास हो सके। कोनोइके ग्रुप के महाप्रबंधक कात्सुफुमि ओत्सुकी ने अपने संबोधन में अपनी लॉजिस्टिक्स कंपनी और जापान में इस उत्पाद को बाजार में लाने की रणनीतियों पर चर्चा की। उन्होंने जापान की औद्योगिक संस्कृति और वहां के औद्योगिक क्षेत्र के जीडीपी में योगदान के बारे में बताया। इस अवसर पर आई.जी.के.वी. राबी, रायपुर के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. हुलास पाठक ने स्टार्टअप को बधाई दी और सभी गणमान्य अतिथियों को संबोधित किया। उन्होंने कृषि व्यवसाय में नवाचार को मजबूत करने और अर्थव्यवस्था में इसके योगदान में इनक्यूबेशन केंद्र की भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि प्ळज्ञट के इनक्यूबेशन केंद्र ने 300 प्रारंभिक चरण के स्टार्टअप्स को इनक्यूबेट किया है, जिनमें से 119 स्टार्टअप्स को 13.28 करोड़ रुपये की ग्रांट-इन-एड सहायता के लिए अनुशंसित किया गया है। इन स्टार्टअप्स ने 10 लाख से अधिक किसानों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डाला है।

छत्तीसगढ़ के प्रथम मुनिसुव्रतनाथ सौभाग्यम तीर्थ का भव्य शिलान्यास सम्पन्न

राजनंदगांव (विश्व परिवार)। परम पूज्य आचार्य श्री सिद्धांत सागर जी महाराज की परम शिष्या गणिनी आर्यिका सौभाग्यमती माता जी के प्रेरणा एवं आशीर्वाद से छत्तीसगढ़ का सर्वप्रथम मुनिसुव्रत नाथ सौभाग्यम तीर्थ का शिलान्यास गत दिवस संपन्न हुआ।

इस शिलान्यास समारोह में संपूर्ण संपूर्ण छत्तीसगढ़ से अनेक अनेक महानुभावों ने पधारकर अपना सहयोग प्रदान किया।

राजनांदगांव जिले में स्थित ठाकुर टोला ग्राम के समीप सम्मेद शिखरजी यात्रा के मार्ग पर स्थित इस तीर्थ में भव्य त्रिकाल चौबीसी मानस्तम्भ जिसमें त्रिकाल चौबीसी की 72 जिन प्रतिमा विराजमान होगी। इसका शिलान्यास दानवीर श्री नरेंद्र जैन श्रीमती अरुणा जैन श्री योगेंद्र श्रद्धा जैन गुरु कृपा परिवार रायपुर द्वारा किया गया।

संत भवन का शिलान्यास श्री सुरेखा संतोष काला रायपुर परिवार एवं मूल नायक मुनिसुव्रत नाथ जिनालय का शिलान्यास श्री निर्मल सुबोध सुशील छाबड़ा परिवार राजनांदगांव द्वारा संपन्न किया गया।

आयोजन का ध्वजारोहण श्री देवेंद्र मंजुला बड़जात्या परिवार दुर्गा के द्वारा संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री मनीष दिव्या सोगानी वैशालीनगर और श्री भारत गोधा भिलाई परिवार के द्वारा आने वाले समस्त अतिथियों के लिए भोजन व्यवस्था की गई थी। इस अवसर पर क्षेत्र पर दो एकड़ भूमि प्रदाता श्री राजेंद्र कुमार पुष्पा देवी सतीश जयंती वंदना सचिन सागर परिवार का भी सत्कार किया गया।

साथ ही मूल नायक भगवान श्री 1008 मुनीसुव्रतनाथ भगवान के पत्थर का शीला पूजन श्री देवेंद्र कुमार सजल काला दुर्गा परिवार के द्वारा किया गया।

ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री संतोष जी काला रायपुर ने क्षेत्र की जानकारी देती हुई सभी लोगों का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर गणिनी आर्यिका सौभाग्यमती माताजी ने अपने प्रवचनों में इस बात का उल्लेख करते हुए कहा की जिन शासन की प्रभावना में जिनायतानो का बहुत बड़ा स्थान होता है। हमें साधु जनों के निर्विघ्न बिहार हो सके इसके लिए स्थान स्थान पर इस तरह के धर्म आयतनों को स्थापित करना चाहिए। जिससे जिनशासन की प्रभावना दिन दूनी रात चौगुनी हो सके। इस संपूर्ण कार्यक्रम के विधि विधान छतरपुर मध्य प्रदेश से बाल ब्रह्मचारी पंकज शास्त्री रवि कीर्ति जी भिंड एवं पंडित अजीत जी शास्त्री रायपुर के द्वारा संपन्न हुआ।

गुरु मां गणिनी सौभाग्यमती ट्रस्ट के समस्त ट्रस्टी जनों ने पूज्य माता जी के पद प्रक्षालन करते हुए उनका मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। इस भव्य आयोजन में छत्तीसगढ़ एवं अन्य प्रांतो से सैकड़ो की संख्या में श्रद्धालु जनों ने सहभागिता कर इस तीर्थ निर्माण के शिलान्यास में अपना योगदान दिया।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर गुरूवार 28 नवंबर 2024

संक्षिप्त समाचार

कलेक्टर ने ली समय सीमा की बैठक

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। जिला कार्यालय के डंकिनी सभा कक्ष में आज समय सीमा की बैठक कलेक्टर श्री मयंक चतुर्वेदी द्वारा ली गई। बैठक में सर्वप्रथम उन्होंने विगत दिवस हुए प्रदेश के मुख्यमंत्री के दंतेवाड़ा प्रवास के दौरान प्राप्त आवेदनों की समीक्षा करते हुए कहा कि सीएम प्रवास के दौरान प्राप्त विभिन्न विभागों से संबंधित आवेदनों का निराकरण प्राथमिकता से किए जाएं क्योंकि इन आवेदनों के निराकरण की मॉनिटरिंग मुख्यमंत्री सचिवालय से की जाती है अत: इसमें किसी भी प्रकार का विलंब नहीं होना चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने डंकिनी नदी के घाटों की सफाई की ओर ध्यानाकर्षित करते हुए कहा कि घाटों की सफाई नियमित और सुनियोजित तरीके से किए जाएं इसके लिए नगरपालिका एवं लोक निर्माण विभाग आपसी समन्वय से कार्ययोजना तैयार करें। इसके साथ ही कलेक्टर ने कहा कि कई बार यह देखा गया है कि विभागीय गाइडलाइन एवं सर्कुलर आदेश के चलते अत्यंत जरूरतमंद हितग्राहियों को वांछित लाभ नहीं मिल पाता और ऐसे प्रकरण अक्सर शिक्षा एवं स्वास्थ्य विभाग के अन्तर्गत आते रहते है। इनमें शैक्षणिक विषयवस्तु या फिर मरीजो के उपचार संबंधी मसले हो। अत: इसे देखते हुए ऐसे हितग्राहियों को डीएमएफ मद से सहायता दी जा सकती है इसके लिए कमेटी का गठन करने की आवश्यकता है, जिसके अनुषंसा से ऐसे लाभार्थियों को तात्कालिक सहायता उपलब्ध कराई जा सकेगी। इसके लिए संबंधित विभाग आवश्यक कार्यवाही करें। इसके साथ ही कलेक्टर ने जन शिकायत, पीजीपोर्टल, सीएम जनदर्शन, से संबंधित विभिन्न प्रकरणों की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए। इस मौके पर बैठक में जिला पंचायत सीईओ श्री जयंत नाहटा, अपर कलेक्टर श्री राजेश पात्रे सहित अन्य विभाग के विभाग प्रमुख उपस्थित थे।

जिला अस्पताल से कैदी भागा

धमतरी(विश्व परिवार)। जेल प्रहरी को चकमा देकर कैदी जिला अस्पताल से फरार हो गया. इस घटना के बाद पुलिस जेल प्रहरी को सस्पेंड कर दिया गया है. बता दें कि पंचराम निषाद उर्फ पंचू चोरी के आरोप में जिला जेल में विचाराधीन बंदी था. उसके खिलाफ कोतवाली थाने में एफआईआर दर्ज है. जानकारी के मुताबिक, चोरी और धोखाधड़ी के मामले में पंचू 15 सितंबर 2024 को गिरफ्तार हुआ था. पेट दर्द होने पर एम्बुलेंस से कैदी पंचू को प्रहरी जिला अस्पताल लेकर गया था. यहां अस्पताल के शौचालय में बैठकर हथकड़ी खोलकर कैदी फरार हो गया. यह घटना रविवार दोपहर की घटना है।

संविधान दिवस पर कलेक्टर ने दिलाई अधिकारियों को शपथ

नारायणपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर बिपिन मांझी ने जिला कार्यालय के सभाकक्ष में जिला स्तरीय अधिकारियों को भारत के संविधान की रक्षा करने के लिए शपथ दिलाई। उन्होनें 26 नवंबर संविधान दिवस के अवसर पर जिला कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भारतीय संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक रूप से वाचन किया। उल्लेखनीय है कि भारत की आजादी के बाद नागरिकों और देश को आगे ले जाने के लिए एक सशक्त दस्तावेज के रूप में 26 नवम्बर 1949 को संविधान सभा ने भारतीय संविधान को अंगीकृत और आत्मार्पित किया था। इस संविधान को बनाने में जितने दिन और साल लगे, वे इस बात के गवाह हैं कि हमारा संविधान दुनिया का सबसे बड़ा संविधान है। इसके निर्माण का श्रेय प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉक्टर बी. आर. अंबेडकर को दिया जाता है, लेकिन यह भी ध्यान देने योग्य है कि प्रारूप समिति में कुल 200 सदस्य थे, जिनका योगदान भी महत्वपूर्ण था। संविधान के निर्माण की प्रक्रिया 26 नवंबर 1949 को पूरी हुई और यह 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ। इसके बाद से, संविधान ने अपने अधिकारों और उपयोगिताओं को सरलता से लोगों तक पहुंचाया। आज, जब हम संविधान दिवस के 75 साल पूरे कर चुके हैं, यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम संविधान के महत्व, इसके उपयोग और अधिकारों को समझें और उन्हें सदुपयोग करें। सभी वर्गों की भावनाओं और जन अपेक्षाओं को संविधान में समाहित किया गया, जिससे सशक्त राष्ट्र निर्माण का सपना बखूबी साकार हो सका है। भारत की विविधता को एक सूत्र में पिरोकर रखने के लिए एक मजबूत आधार की जरूरत थी, जिसे बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के नेतृत्व में संविधान निर्माताओं ने पूरा किया। भारतीय संविधान के निर्माण में छत्तीसगढ़ की अनके विभूतियों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस अवसर पर मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत वासु जैन, अपर कलेक्टर बीरेन्द्र बहादुर पंचभाई, संयुक्त कलेक्टर अभिषेक गुप्ता, एस.डी.एम. ओरछा अभयजीत मंडावी, डिप्टी कलेक्टर डॉ. सुमित गर्ग, सहायक आयुक्त आदिवासी डॉ. राजेन्द्र सिंह, सीएमएचओ डॉ. टी.आर. कुंवर, कार्यक्रम अधिकारी रविकांत ध्रुवे, जिला कोषालय अधिकरी हरीश साहू सहित जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

धान खरीदी केंद्रों में बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराएं : कलेक्टर बिपिन मांझी

नारायणपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर बिपिन मांझी ने साप्ताहिक समय सीमा की बैठक जिला कार्यालय के सभाकक्ष में ली। उन्होंने नियद नेल्लानार के स्वीकृत कार्यों को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिये। उन्होंने नियद नेल्लानार योजनांतर्गत संचालित विभागीय अधिकारियों से कार्य की प्रगति की समीक्षा करते हुए कहा की पेयजल, सड़क निर्माण, वनाधिकार पट्टा, सौर उर्जा, नलजल योजना, अस्पताल, अंगनबाड़ी, उपस्वास्थ्य केन्द्र संचालित करने और प्रधानमंत्री फसल बीमा से लाभान्वित करने निर्देशित किए। कलेक्टर ने धान खरीदी केन्द्रों में बारदाना, पेयजल, छाया, शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिये। उन्होंने आंगनबाड़ी केन्द्र के पोषण ट्रैकर, स्कूल शिक्षा विभाग के स्कूल जनत कार्यक्रम में गुणवत्ता लाने, नियद नेल्लानार योजनातंर्गत स्वीकृत निर्माण कार्यो को अविलंब पूर्ण कराने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने समय सीमा के लंबित प्रकरणों एवं पत्रों की गहन समीक्षा करते हुए अधिकारियों से कहा कि समय सीमा मे प्रकरणों का निराकरण करना सुनिश्चित करें ताकि मुख्यमंत्री साय की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ जिले के ग्रामीणों को समय पर मिल सके। उन्होंने नियद नेल्लानार, प्रधानमंत्री आवास, प्रधानमंत्री जनमन तथा वर्ष 2024-25 के लिए पहुंचविहीन केन्द्रों में मध्यान्ह भोजन, पूरक पोषण आहार और राशन सामग्री भण्डार करने तथा समग्र शिक्षा के तहत् स्वीकृत कार्यों को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए। बैठक में खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में धान खरीदी केन्द्रों में धान खरीदी की समीक्षा कर मंडी से धान उठाव की व्यवस्थाएं पूर्व में ही सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने मिशन अमृत सरोवर अंतर्गत स्थायीत्व प्रदान एवं भारत सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देश के अनुपालन एव राज्य स्तर नोडल अधिकारी नियुक्ति करने के संबंध में, सरकार से समृद्धि अंतर्गत एम-पैक्स, डेयरी, मत्स्य, वनोपज, सोसाईटी गठन, ग्राम पंचायत सचिव के विरूद्ध कार्यवाही करने, छत्तीसगढ नक्सलवाद उन्मूलन नीति के क्रियान्वयन की समीक्षा की। मांझी ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन अंतर्गत स्वीकृत संविदा पदों की भर्ती पूर्ण करने, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजनांतर्गत वन अधिकार पट्टाधारी किसानों एवं विषेष रूप से पिछड़ी जनजाति के सेचूरेशन करने, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना मौसम खरीफ वर्ष 2024 में राजस्व ग्राम अंतर्गत वन पट्टाधारी कृषकों के प्रविष्टि करने, पूर्व में जनदर्शन में दिए गए आवेदन में कार्यवाही करने, मुख्यमंत्री जी की अध्यक्षता में आयोजित कलेक्टर कॉन्फ्रेंस में दिये गये निर्देशानुसार जिले में संधारित निराश्रित निधि में उपलब्ध राशि के कार्ययोजना बनाने निर्देशित किया। कलेक्टर ने महिला एवं बाल विकास विभाग, कृषि, कौशल विकास और नगरपालिका परिषद द्वारा संचालित योजनाओं का गहन समीक्षा किया। उन्होंने पशुधन विकास विभाग के उप संचालक को निर्देशित करते हुए कहा कि पशुधनों को बिमारियों से बचाने के लिए शिविर लगाकर टीकाकरण कराएं। उन्होंने नारायणपुर मेनरोड़ पुलिया निर्माण कार्य एवं पेयजल विद्युतीकरण सड़क निर्माण आदि लंबित कार्यो को पूर्ण करने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री कौशल विकास योजना से लक्ष्मी नायक के सपनों को मिली ऊंचाई

सिलाई मशीन ऑपरेटर के ट्रेड में नि:शुल्क प्रशिक्षण लेकर प्राप्त किया रोजगार

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री कौशल विकास योजना के तहत विभिन्न विभागों द्वारा आयोजित योजनाओं में कौशल विकास हेतु पात्र युवाओं को एक ही मंच पर एकरूपता के साथ (जैसे कोर्स, प्रशिक्षण, मूल्यांकन, प्रमाण-पत्र इत्यादि) कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इस योजना के तहत अन्य प्रायोजित योजनाओं यथा श्रम, राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन, नगरीय प्रशासन, कृषि इत्यादि विभागों द्वारा प्रायोजित योजनाओं, कार्यक्रमों से संबंधित कौशल प्रशिक्षण के संचालन से जिले के युवा लाभान्वित हो रहे है। ऐस ही लाभान्वित एवं प्रशिक्षु हितग्राही ब्लॉक कुआकोंडा ग्राम-पुलपाड़ की निवासी ''लक्ष्मी नायक'' भी है। वे बताती हैं कि वह एक मध्यमवर्गीय कृषक परिवार से संबंधित है पिता श्री नवीनो नायक की खेती किसानी से ही परिवार का गुजर बसर हो पाता था। परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति के चलते मेरा अपने पांव में खड़ा होना जरूरी हो गया था। ताकि मैं अपने परिवार की आर्थिक संबल दे सकू। इसी बीच मुझे लाइवलीहुड कॉलेज कारली दंतेवाड़ा में संचालित मुख्यमंत्री कौशल विकास योजना के तहत नि:शुल्क सेविंग मशीन ऑपरेटर नि:शुल्क प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट के बारे जानकारी मिली। चूंकि मेरी रुचि प्रारंभ से ही सिलाई कढ़ाई में थी। अत: मैंने तुरंत अपना नाम सिलाई कोर्स में दर्ज कराया एवं 03 महीने नि:शुल्क कुशल प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात मैंने स्वयं के द्वारा सिलाई कार्य करना शुरू किया। मेरे इस उपयुक्त निर्णय में जीवन में बदलाव लाया। जिससे न केवल मेरी कौशल वृद्धि हुई, बल्कि मुझे अपने जीवन को सुधारने का एक अवसर भी मिला। इस तरह नि:शुल्क प्रशिक्षण से मुझे रोजगार का बेहतरीन अवसर मिला। मुझे खुशी है कि आज मैं आत्मनिर्भर बन चुकी हूं। सिलाई कार्य से मुझे प्रतिमाह 7 से 8 हजार रुपये की आय प्राप्त होती है।

जिले के अमृत सरोवर स्थलों में मनाया गया संविधान दिवस

संविधान की प्रस्तावना का पठन कर ग्रामीणों, छात्र-छात्राओं को दी गई भारतीय संविधान के महत्व एवं विशेषताओं की जानकारी

बालोद(विश्व परिवार)। राज्य शासन के निर्देशानुसार संविधान दिवस के अवसर पर आज 26 नवंबर को जिले के महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना के अंतर्गत निर्मित जिले के 138 अमृत सरोवर स्थलों में संविधान दिवस का आयोजन किया गया। कलेक्टर श्री इन्द्रजीत सिंह चन्द्रवाल के निर्देशानुसार संविधान दिवस के पावन अवसर को ऐतिहासिक एवं स्मरणीय बनाए रखने हेतु आज आयोजित कार्यक्रम के दौरान भारतीय संविधान दिवस की प्रस्तावना का पठन भी किया गया। इस अवसर पर जिले के बालोद विकासखण्ड के ग्राम पड़कीभाट के अमृत सरोवर में जिला स्तरीय संविधान दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. संजय कन्नौजे ने भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया। इस अवसर पर उन्होंने समारोह में उपस्थित लोगों को भारतीय संविधान उद्देशिका का वाचन कराने के अलावा भारतीय संविधान के आदर्शों तथा देश के नागरिकों का संविधान के प्रति प्रतिबद्धता के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य संविधान के प्रति नागरिकों को जागरूक करना तथा देश के नागरिकों को उनके अधिकारों एवं कर्तव्यों की जानकारी देना भी है।

जिले में अब तक 1 लाख 17 हजार 360 क्विंटल धान की हुई खरीदी

कोण्डागांव(विश्व परिवार)। राज्य शासन के निर्देशानुसार जिले के पंजीकृत किसानों से प्रति एकड़ 21 क्विंटल के मान से ही धान खरीदी की जा रही है। जिले के धान उपार्जन केन्द्रों में लगातार धान खरीदी का कार्य जारी है और अब तक 01 लाख 17 हजार 360 क्विंटल धान की खरीदी हो चुकी है। जिला प्रशासन द्वारा धान खरीदी केन्द्रों में टोकन कटाने से लेकर धान खरीदी का कार्य सुचारू रूप से संचालित हो और किसानों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई है। सभी केन्द्रों में इलेक्ट्रॉनिक तौल यंत्र और माइक्रो एटीएम सहित अन्य आवश्यक सुविधाएं मिलने से किसानों को धान खरीदी के दौरान बहुत सहुलियत मिल रही है। जिला खाद्य अधिकारी से प्राप्त जानकारी के अनुसार जिले में कुल 55 हजार 298 पंजीकृत किसानों से 67 उपार्जन केन्द्रों में अब तक 01 लाख 17 हजार 360 क्विंटल धान की खरीदी हुई है, जिसमें सबसे ज्यादा गम्हरी धान खरीदी केन्द्र में 10,042 क्विंटल, मुलमुला केन्द्र में 8,164 क्विंटल, बफना केन्द्र में 7,669 क्विंटल, बहीगांव में 5,864 क्विंटल और अरण्डी में 5,664 क्विंटल धान की खरीदी की गई।

राष्ट्रीय सेवा योजना राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्रदान करता है - डॉ गणेश साहू

युवा भारत निर्माण में रासेयों मील का पत्थर साबित होगा - डॉ गणेश साहू

धमतरी(विश्व परिवार)। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खरतुली के तत्वाधान में ग्राम भटगांव धमतरी में सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना विशेष शिविर का आयोजन किया गया है ।जहां 53 स्वयंसेवक कार्यक्रम अधिकारी आकाशगिरी गोस्वामी के नेतृत्व में सेवा कार्य, गांव की गलियों की सफाई संग सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेकर अपने व्यक्तित्व का विकास कर रहे है ।शिविर के पांचवें दिन बौद्धिक और परिचर्चा में जितेंद्र डहरिया तहसीलदार धमतरी ने अपने उद्बोधन में बच्चो को सफलता प्राप्त करने के लिए अपने लक्ष्य में निर्धारित रह कर लगातार मेहनत करने की बात कही 7 विशेष वक्ता के रूप में डॉ गणेश प्रसाद साहू (रा से यो कार्यक्रम अधिकारी शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भोथली) ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना से व्यक्तित्व का विकास होता है। साथ ही बच्चो को राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से होने वाले अनेक गतिविधियों को बताया ।एनएसएस छात्रों को व्यक्तिगत रूप से और समूह के रूप में भी विकसित होने में मदद करता है । एनएसएस गतिविधियों के तहत विभिन्न कार्यों के लिए स्वयंसेवा करने से छात्रों को आत्मविश्वास मिलता है, नेतृत्व कौशल विकसित होता है और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के विभिन्न लोगों के बारे में जानने का मौका मिलता है ।देवी भूमिका जी (कथावाचिका) ने भी राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रेरणा पुरुष स्वामी विवेकानंद जी के द्वारा किए गए सेवा कार्य को बताया साथ ही नशा मुक्त समाज तैयार करने की बात कही और सदैव नारियों का सम्मान समाज में हो यह संदेश दिया ।भूमिका देवी ने गीत व भजनों के माध्यम से सभी को मंत्र मुक्त कर दिया ।लक्ष्मी नारायण सिंन्हा सहायक प्राध्यापक ने स्वयं सेवकों को प्रेरित किया।

किसी भी कार्य को करने के लिए दृढ़संकल्पित होना जरूरी है - कलेक्टर गांधी

बेहतर समय प्रबंधन, कठिन मेहनत और परिश्रम से सफलता होगी हासिल

धमतरी(विश्व परिवार)। स्थानीय बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय धमतरी में आज पीएम उषा द्वारा प्रायोजित एक दिवसीय कैरियर गाईडेंस कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर कलेक्टर सुश्री नम्रता गांधी सहित अधिकारियों ने महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को सफलता के मूलमंत्र बताए। साथ ही कलेक्टर सुश्री गांधी ने विद्यार्थियों के सवालों का भी बड़ी सहजता से जवाब दिया। कलेक्टर सुश्री नम्रता गांधी ने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि किसी भी कार्य को दबाव में अथवा मजबूरी में नहीं करें, बल्कि उस कार्य में स्वयं की दिलचस्पी होना जरूरी है। उन्होंने कहा कि पढ़ाई के साथ-साथ लक्ष्य निर्धारित कर बेहतर समय प्रबंधन और कड़ी मेहनत करनी चाहिए। हर विद्यार्थी को अपने लिए पढ़ाई करनी चाहिए, क्योंकि पढ़ाई ही वह साधन है, जो आपको उच्चस्तर तक ले जाने में मदद करता है। उन्होंने अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि जिंदगी में असफलता से घबराएं नहीं और परिस्थितियों का सामना करने डटे रहें। कलेक्टर ने आगे कहा कि आप लोगों का भविष्य उज्जवल है, अच्छा इंसान बने, अधिक से अधिक लोगों की सेवा कर उनके जीवन को बदलें। उन्होंने कहा कि जीवन में खुश रहना एवं रखना महत्वपूर्ण है। जिंदगी खूबसूरत है, जिंदगी में कई परिस्थितियों होती हैं। सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ें। किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उसमें स्वयं की दिलचस्पी होना जरूरी है। कलेक्टर ने कहा कि यूपीएससी, पीएससी एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए प्रश्नों का अवलोकन करें और उन्हें समझें कि किस क्षेत्र से प्रश्न पूछा गया है। उन्होंने बच्चों को प्रेरित किया कि मैंने दसवीं क्लास से ही आईएएस बनने की ज़िद कर ली थी और मैं आईएएस बन गई। कलेक्टर ने कहा कि कोई भी चीज को पाने के लिए लक्ष्य निर्धारित करने के साथ दृढ़संकल्पित होना जरूरी है। साथ ही जज्बा और कड़ी मेहनत से निश्चित ही सकारात्मक परिणाम मिलता है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों में सीखने, समझने की जिज्ञासा होनी चाहिए। पढ़ाई को बोझ समझने से बेहतर हैं कि खेल की तरह मन लगाकर करें। उन्होंने कहा कि कड़ी मेहनत कर कुछ बड़ा कर गुजरने की चाहत होनी चाहिए। जीवन में कठिनाई के दौर भी आते हैं, लेकिन मेहनत ही सफलता दिलाती है। कलेक्टर ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि यूपीएससी में चयनित अभ्यर्थियों को इंटरव्यू में सबसे सरल सवाल पूछे जाते हैं। सर्वप्रथम अभ्यर्थियों से बेसिक जानकारी ली जाती है और अभ्यर्थियों के व्यक्तित्व के बारे में सवाल किए जाते हैं। साथ ही कलेक्टर ने विद्यार्थियों के सवालों के जवाब भी दिए। इस अवसर डीएसपी सुश्री नेहा पवार, सहायक प्राध्यापक नवीन शासकीय महाविद्यालय कंडेल श्री पीतांबर सिन्हा सहित अन्य अतिथियों ने भी बच्चों को करियर के टिप्स दिए।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर गुरूवार 28 नवंबर 2024

व्यापार समाचार

सर्वेश्वर फूड्स लिमिटेड की सिंगापुर सब्सिडीएरी ने 12,000 मीट्रिक टन चावल का ऑर्डर प्राप्त किया, 2000 मिलियन रुपये वार्षिक राजस्व की योजना

मुंबई: सर्वेश्वर फूड्स लिमिटेड (बीएसई: 543688, एनएसई: SARVESHWAR), जो कि आईएसओ 22000:2018 और यूएसएफडीए द्वारा प्रमाणित एग्रो प्रोडक्ट एफएमसीजी क्षेत्र में एक प्रमुख कंपनी है, ने घोषणा की है कि इसकी पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी, ग्रीन प्वाइंट पीटीई. लिमिटेड, सिंगापुर ने प्रीमियम भारतीय लांग ग्रेन पारबॉयल्ड चावल की 12,000 मीट्रिक टन की आपूर्ति के लिए एक बड़ा ऑर्डर प्राप्त किया है, जिसकी कीमत लगभग 445 मिलियन रुपये है। यह ऑर्डर सहायक कंपनी की रणनीतिक योजना का हिस्सा है, जिसका लक्ष्य इस वित्तीय वर्ष में 2000 मिलियन रुपये का व्यवसाय प्राप्त करना है। हाल ही में अधिग्रहित ग्रीन प्वाइंट पीटीई, जो कि सिंगापुर में स्थित है, चावल और चावल आधारित उत्पादों के बढ़ते वैश्विक बाजार के लिए एक गेटवे के रूप में कार्य करता है। यह ऑर्डर सर्वेश्वर फूड्स की स्थिति को मजबूत करता है, वैश्विक चावल आधारित उत्पादों का बाजार 2023 में 226.36 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2031 तक 361.41 बिलियन अमेरिकी डॉलर होने की उम्मीद है, जो ग्लूटेन-फ्री विकल्पों की बढ़ती मांग से प्रेरित है। सीलिएक रोग और ग्लूटेन असहिष्णुता की बढ़ती प्रवृत्ति, साथ ही चावल-आधारित उत्पादों के स्वास्थ्य लाभों जैसे कि कम वसा और उच्च फाइबर के बारे में जागरूकता, वैश्विक मांग को बढ़ा रही है। ग्रीन प्वाइंट पीटीई. लिमिटेड इस तेजी से बढ़ते क्षेत्र में महत्वपूर्ण मार्केट शेयर हासिल करने के लिए रणनीतिक रूप से स्थित है।

एचडीएफसी बैंक ने अर्ध-शहरी और ग्रामीण भारत के लिए प्रगति बचत खाता शुरू किया

मुंबई: भारत के अग्रणी निजी क्षेत्र के बैंक एचडीएफसी बैंक ने अपने प्रगति बचत खाते के लॉन्च की घोषणा की, जिसे विशेष रूप से भारत भर में ग्रामीण और अर्ध-शहरी लोगों की बैंकिंग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी 51 प्रतिशत शाखाओं के साथ, एचडीएफसी बैंक ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं का समर्थन करना और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना जारी रखता है। एचडीएफसी बैंक द्वारा प्रगति बचत खाते का उद्देश्य भारत के कृषि क्षेत्र के लिए एक व्यापक बैंकिंग पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है, जिसमें किसान (पारंपरिक और मवेशी प्रजनन, मत्स्य पालन, मुर्गी पालन और डेयरी फार्मिंग दोनों), स्व-नियोजित व्यक्ति, ग्रामीण निवासी, स्वयं सहायता समूह और सहकारी समितियाँ शामिल हैं। अर्ध-शहरी और ग्रामीण स्थानों में एचडीएफसी बैंक की 4600 से अधिक शाखाएँ भारत की लगभग दो तिहाई आबादी तक पहुँचने के लिए उत्पाद का लाभ उठाने के लिए एक 'टचपॉइंट' के रूप में कार्य करेंगी, जिससे ग्रामीण आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। इसके अलावा, नई पेशकश में कई उद्योग-प्रथम सुविधाएँ शामिल होंगी, जैसे कि बिगहाट के साथ साझेदारी, जिससे 17 मिलियन से अधिक किसानों को छूट और बेहतर उत्पादकता के लिए कृषि संसाधनों तक पहुँच प्राप्त होगी। इसके अलावा, बैंक एचडीएफसी एर्गो जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के साथ साझेदारी में टू-व्हीलर लोन (टीडब्ल्यूएल), ट्रैक्टर लोन (टीआरएल), गोल्ड लोन, किसान गोल्ड कार्ड (केजीसी) उत्पादों और मवेशी बीमा पर डिस्काउंटेड एसेट ऑफर सहित कई तरह के क्यूरेटेड प्रस्ताव लेकर आया है।

जिंदल वर्ल्डवाइड लिमिटेड ने वित्त वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही के लिए शानदार आय का प्रदर्शन किया, शुद्ध लाभ में 35.2 प्रतिशत की सालाना वृद्धि

रायपुर। जिंदल वर्ल्डवाइड लिमिटेड (बीएसई: 531543, एनएसई: JINDWORLD), एक विविधीकृत और एकीकृत कपड़ा फैब्रिक्स और शर्टिंग निर्माता तथा दुनिया के सबसे बड़े डेनिम फैब्रिक निर्माताओं में से एक, ने 30 सितंबर 2024 को समाप्त होने वाली तिमाही और छमाही के लिए अपनी आय की रिपोर्ट प्रस्तुत की है। 30 सितंबर 2024 को समाप्त तिमाही के लिए, वित्त वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही मे संचालन से राजस्व में सालाना 45.70% की वृद्धि होकर यह रुपे 5708 मिलियन हो गया, जो नॉर्मलाइज्ड बिजनेस ऑपरेशंस और तैयार कपड़ों की घरेलू एवं निर्यात बाजार की बढ़ती मांग के कारण हुआ। वित्त वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही मे एबिटा में सालाना 38.30% की वृद्धि होकर यह रुपे 484 मिलियन हो गया, जिसने परिचालन लाभ में प्रमुख सुधार दिखाया। कर से पूर्व लाभ (Profit Before Ta&) में 44.78% की वृद्धि हुई। शुद्ध लाभ में सालाना 35.2त्न की उन्नति हुई, जो पिछले वित्त वर्ष 2024 की दूसरी तिमाही के रुपे 128 मिलियन से वित्त वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही मे बढ़कर रूपे 173 मिलियन हो गया। 30 सितंबर 2024 को समाप्त पहली छमाही के लिए, संचालन से राजस्व रूपे. 10,582 मिलियन के रूप में रिपोर्ट किया गया, जो सालाना 31.9% की वृद्धि दर्शाता है। एबिटा में 23.2% की वृद्धि हुई, जो वित्त वर्ष 2024 की पहली छमाही मे रुपए 771 मिलियन से बढ़कर वित्त वर्ष 2025 की पहली छमाही मे रुपए 950 मिलियन हो गया।

सुरक्षा डायग्नोस्टिक लिमिटेड का आरंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव शुक्रवार, 29 नवंबर, 2024 को खुलेगा

रायपुर। सुरक्षा डायग्नोस्टिक लिमिटेड का आरंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव शुक्रवार, 29 नवंबर, 2024 को खुलेगा। एंकर निवेशक बोली लगाने की तिथि गुरुवार, 28 नवंबर, 2024 है। बोली/प्रस्ताव बंद होने की तिथि मंगलवार, 3 दिसंबर, 2024 है। प्रस्ताव का प्राइस बैंड ? 420 प्रति इक्विटी शेयर से ? 441 प्रति इक्विटी शेयर तय किया गया है। न्यूनतम 34 इक्विटी शेयरों और उसके बाद 34 इक्विटी शेयरों के गुणकों के लिए बोलियाँ लगाई जा सकती हैं। आरंभिक सार्वजनिक पेशकश 19,189,330 इक्विटी शेयरों की बिक्री के लिए एक प्रस्ताव है, जिसमें डॉ. सोमनाथ चटर्जी द्वारा 2,132,148 इक्विटी शेयर, रितु मित्तल द्वारा 2,132,148 इक्विटी शेयर, सतीश कुमार वर्मा द्वारा 2,132,148 इक्विटी शेयर, ऑर्बिमेड एशिया ड्डढ्ढ मॉरीशस लिमिटेड द्वारा 10,660,737 इक्विटी शेयर, मुन्ना लाल केजरीवाल द्वारा 799,556 इक्विटी शेयर और संतोष कुमार केजरीवाल द्वारा 1,332,593 इक्विटी शेयर शामिल हैं। कंपनी के इक्विटी शेयरों को बीएसई लिमिटेड और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड में सूचीबद्ध करने का प्रस्ताव है।

राष्ट्रीय स्तर पर बनी 3 नई सहकारी समितियों के माध्यम से भारत का किसान न सिर्फ देश बल्कि पूरी दुनिया के बाज़ार तक पहुँचेगा: अमित शाह

नईदिल्ली (एजेंसी)। हाल ही में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अंतरराष्ट्रीय सहकारिता गठबंधन के अंतरराष्ट्रीय सहकारिता सम्मेलन-2024 का उद्घाटन किया गया। इस मौके पर केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने देश के किसानों और सहकारिता से जुड़े करोड़ों लोगों को यह संदेश दिया कि, 'मोदी जी के कार्यकाल में राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित तीन नए कोऑपरेटिव्स ड्ड राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड (ह्वष्टश्वरु), राष्ट्रीय सहकारी ऑर्गेनिक्स लिमिटेड (ह्वष्टह्वरु) और भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड (ह्वह्वस्सरु) ड्ड के माध्यम से भारत का किसान न सिर्फ देश बल्कि पूरी दुनिया के बाज़ार तक अपनी पहुँच को बढ़ा सकेगा। इफ्को, कृभको और अमूल ने सहकारिता के क्षेत्र में पूरी दुनिया में उदाहरण पेश किया है और इसी प्रकार ये तीनों कोऑपरेटिव्स भी दुनिया के सहकारिता क्षेत्र में काम करने वाले लोगों का मार्गदर्शन करेंगी।' मोदी जी के नेतृत्व और अमित शाह के कुशल मार्गदर्शन में सहकारिता मंत्रालय सहकारिता क्षेत्र के उत्थान के लिए विभिन्न योजनाओं पर काम कर रहा है। बीते तीन वर्षों में देश में सहकारिता आंदोलन को ना सिर्फ गति प्रदान की गई है बल्कि जमीनी स्तर पर उसकी पहुँच को व्यापक बनाने की कवायद भी तेजी से जारी है। यदि देखा जाए तो मोदी जी के नेतृत्व में सहकारिता आंदोलन को और भी अधिक ऊर्जा के साथ आगे बढ़ाने का काम अमित शाह की नीतियों और उनके कार्यकाल में हुआ है। कृषि, डेयरी, मत्स्यपालन, बुनाई, ऋण और व्यापार सहित कई प्रकार की गतिविधियों में सक्रिय 'ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़' सहकारिता क्षेत्र को आजादी के बाद भी वर्षों तक उपेक्षा का शिकार बना कर रखा गया था, जबकि देश की आधी से ज्यादा आबादी किसी-न-किसी रूप में सहकारिता से जुड़ी हुई है। ऐसे में, सहकारिता क्षेत्र को एक नया क्षितिज प्रदान करने के लिए मोदी सरकार ने जुलाई, 2021 में सहकारिता मंत्रालय के गठन का ऐतिहासिक निर्णय लिया था, जिसका कार्य भार केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को सौंपा गया। जहाँ मोदी जी ने स्वायत्त सहकारिता मंत्रालय का गठन करके 'सहकार से समृद्धि' की संकल्पना को साकार करने का काम किया, वहीं जन कल्याण से जुड़ी नीतियों के लिए प्रसिद्ध भारतीय राजनीति के चाणक्य अमित शाह के कुशल मार्गदर्शन में सहकारिता की नींव को मजबूत बनाने की दिशा में अभूतपूर्व कार्य किए जा रहे हैं।

एडिलेड टेस्ट के लिए मिचेल मार्श की गेंदबाजी क्षमता पर संदेह

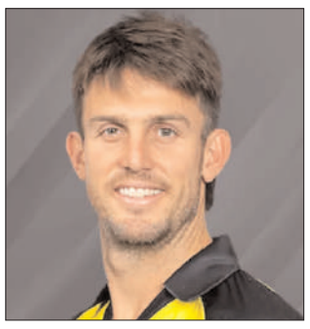

पर्थ(एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के मुख्य कोच एंड्रयू मैकडोनाल्ड ने भारत के खिलाफ 295 रनों की हार के बाद एडिलेड में होने वाले दूसरे टेस्ट मैच के लिए टीम में कोई बदलाव नहीं किया है, लेकिन ऑलराउंडर मिचेल मार्श की गेंदबाजी करने की क्षमता पर संदेह है। सीरीज का दूसरा टेस्ट मैच 6 दिसंबर से एडिलेड ओवल में शुरू हो रहा है। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी श्रृंखला के पहले मैच में हार के बाद, कप्तान पैट कमिंस ने खुलासा किया कि मार्श इस साल ब्रिटेन के सीमित ओवरों के दौरे से जुड़ी परेशानियों से जूझ रहे थे। क्रिकेट डॉट कॉम डॉट एयू ने मैकडोनाल्ड के हवाले से कहा, एडिलेड टेस्ट के लिए चेंजरूम में वही लोग होंगे जो पर्थ में थे। दुनिया में कहीं भी जाओ, परिस्थितियों के हिसाब से खिलाड़ियों को चुनते समय बदलाव करना हमेशा हमारी योजनाओं में शामिल होता है। जब उनसे पूछा गया कि भारत की दो पारियों में कुल 17 ओवर (3-77) फेंकने के बाद मार्श ने कैसा प्रदर्शन किया है, तो मैकडोनाल्ड ने कहा, क्या उन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया है? हम इंतजार करेंगे और देखेंगे। हम जानते थे कि मार्श का प्रदर्शन ज्यादा अच्छा नहीं रहा, लेकिन मुझे लगता है कि पहली पारी में उनका प्रदर्शन संतोषजनक था। श्रृंखला के पहले मैच में भारत के खिलाफ टीम के खराब बल्लेबाजी प्रदर्शन के बाद कोच से यह सवाल किया गया कि क्या एडिलेड में भी वही शुरुआती लाइनअप इस्तेमाल किया जाएगा और क्या विशेषज्ञ बल्लेबाज की जगह इंगलिस पर विचार किया जा सकता है। उन्होंने कहा, हम आगे बढ़ने के साथ इसका आकलन करेंगे, लेकिन जैसा कि मैंने कहा कि जो टीम वहां है, वह एडिलेड में होगी।

पारिवारिक कारणों से ऑस्ट्रेलिया दौरा बीच में छोड़ भारत वापस लौटेंगे गंभीर

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ऑस्ट्रेलिया से वापस आ रहे हैं। टीम इंडिया 30 नवंबर से कैनबरा में प्रधानमंत्री इलेवन के खिलाफ होने वाले दो दिवसीय अभ्यास मैच में मुख्य कोच के बिना मैदान में उतरेगी। बताया जा रहा है कि पारिवारिक कारणों से गंभीर स्वदेश लौट रहे हैं, लेकिन दूसरे टेस्ट से पहले उनके ऑस्ट्रेलिया लौटने की संभावना है। ईएसपीएनक्रिकइंफो की रिपोर्ट के अनुसार, गंभीर निजी कारणों से भारत लौट आए हैं, लेकिन 6 दिसंबर को एडिलेड में होने वाले डे-नाइट टेस्ट से पहले उनके टीम से जुड़ने की उम्मीद है। कैनबरा में होने वाला अभ्यास मैच हालांकि दिन में खेला जाएगा, लेकिन इसमें गुलाबी कूकाबुरा गेंद का इस्तेमाल किया जाएगा। न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू सीरीज में 0-3 से क्लीन स्वीप होने के बाद ऑस्ट्रेलिया सरजमीं पर भारत ने दमदार कमबैक किया। बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में पांच मैचों की सीरीज में भारत 1-0 से आगे है। भारतीय टीम गंभीर की अनुपस्थिति में तैयारियों की देखरेख के लिए सहायक कोच अभिषेक नायर, रयान टेन डोशेट और मोर्ने मोर्केल पर निर्भर रहेगी। इस बीच, कप्तान रोहित शर्मा की वापसी से भारत को मजबूती मिली है, जो पितृत्व अवकाश (पैटरनिटी लीव) के कारण पहले टेस्ट से बाहर रहे थे। हालांकि, रोहित की वापसी के साथ प्लेइंग-11 का चयन थोड़ा पेचीदा हो गया है।

महिंद्रा ट्रैक्टर्स ने छत्तीसगढ़ में कौशल विकास उपलब्धियों का जश्न मनाया

रायपुर (विश्व परिवार)। महिंद्रा ट्रैक्टर्स ने छत्तीसगढ़ में जिला परियोजना लाइवलीहुड कॉलेज सोसाइटी, रायपुर में 'ट्रैक्टर टेक' कौशल विकास कार्यक्रम के अपने पहले बैच के सफल समापन की घोषणा की है ड्ड यह छत्तीसगढ़ राज्य में इस तरह का पहला कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने वाले युवा प्रतिभागियों को एग्रीकल्चर स्किल काउंसिल ऑफ इंडिया (स्ष्टढ्ढ) से उनके कौशल प्रमाण पत्र प्राप्त होंगे, जो उनके करियर की यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा। महिंद्रा ट्रैक्टर्स 'ट्रैक्टर टेक' कौशल विकास कार्यक्रम उम्मीदवारों को उद्योग से संबंधित कौशल प्रशिक्षण प्रदान करता है, जिसके बाद ग्रामीण युवाओं, दोनों युवा पुरुषों और महिलाओं के लिए ऑन-जॉब प्रशिक्षण के अवसर प्रदान करता है, जो भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ उठाने के लिए कौशल विकास पर माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के फोकस के साथ संरेखित है। महिंद्रा ट्रैक्टर्स ने ट्रैक्टर सेवा, बिक्री और असेंबली के क्षेत्रों में कौशल विकास को कवर करने वाला एक अनूठा पाठ्यक्रम तैयार किया है, जिसे इस क्षेत्र में अनुभवी महिंद्रा ट्रैक्टर्स के प्रशिक्षकों द्वारा वितरित किया जाता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से, युवाओं को गतिशीलता और मशीनीकरण में नवीनतम उपकरणों पर व्यावहारिक अनुभव मिलता है। इस कार्यक्रम के पूरा होने पर, केंद्र के युवाओं को जिला परियोजना आजीविका महाविद्यालय सोसायटी, रायपुर, छत्तीसगढ़ के साथ संयुक्त रूप से आयोजित महिंद्रा ट्रैक्टर्स 'प्लेसमेंट दिवस' के अवसर पर कैरियर के अवसरों से जोड़ा गया। ये अवसर महिंद्रा की डीलरशिप और विनिर्माण संयंत्रों में बिक्री, सेवा और असेंबली भूमिकाओं के अलावा अन्य संगठनों में भी उपलब्ध थे।

महिंद्रा ट्रैक्टर्स का 'ट्रैक्टर टेक' कौशल विकास कार्यक्रम और 'प्लेसमेंट दिवस' कौशल विकास के माध्यम से व्यक्तियों को सशक्त बनाने, भारत के कार्यबल में उनके प्रवेश को बढ़ावा देने के लिए महिंद्रा की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

शिक्षा और रोजगार के बीच की खाई को पाटकर, कंपनी उम्मीदवारों की आजीविका को बढ़ाने और समुदायों की आर्थिक वृद्धि में योगदान देने का प्रयास करती है।

श्रीराम फाइनेंस ने दिग्गज राहुल द्रविड़ के साथ मिलकर शुरू किया प्रेरक कैंपेन '#टुगेदर, वी सोअर'

बिलासपुर: देश की प्रमुख वित्तीय सेवा प्रदाताओं मे से एक, श्रीराम ग्रुप की प्रमुख कंपनी श्रीराम फाइनेंस ने 'सटुगेदर, वी सोअर' शिर्षित, एक बेहद प्रेरक ब्रांड कैंपेन प्रारंभ किया है। यह कैंपेन, परस्पर संबंध और एकता की ताकत पर प्रकाश डालते हुए, श्रीराम फाइनेंस की भारत की उम्मीदों के साथ साझेदारी की प्रतिबद्धता दर्शाता है।

आज, कई भारतीय 'तो क्या?' के सिद्धांत को अपना रहे हैं, जो सफलता की अपनी यात्रा में किसी भी चुनौती को पार करने की आकांक्षा को दर्शाता है। इस कैंपेन का उद्देश्य इस भावना का जश्न मनाना और राहुल द्रविड़ के अपने जीवन के एक अंश के साथ साझेदारी को आगे बढ़ने के साधन के रूप में दर्शाना है।

संदेश स्पष्ट है, 'टुगेदर, वी सोअर' अपने ग्राहकों के साथ संबंधों को मज़बूत बनाकर, हम उन्हें अपनी शक्ति को पहचान कर, अपने सपनों को हासिल करने में उनकी मदद करते हैं।

कैंपेन को प्रेर्णात्मक बनाने वाली स्टार पॉवर- कैंपेन में क्रिकेट के दिग्गज राहुल द्रविड़ ब्रांड एंबेसडर के रूप में शामिल हैं, जो टीमवर्क और दृढ़ता के मूल्यों को दर्शाते हैं, जिसका श्रीराम फाइनेंस भी समर्थन करता है। उनकी उपस्थिति, विकास को प्रेरित करने वाली साझेदारियों को बढ़ावा देने के लिए ब्रांड की प्रतिबद्धता की पुष्टि करती है।

अभियान के प्रभाव को और बढ़ाते हुए, प्रसिद्ध अभिनेता नसीरुद्दीन शाह ने हिंदी एड फिल्म 'हर इंडियन के साथ: जुड़ेंगे, उड़ेंगे' के संस्करण में अपनी आवाज़ दी है।

सैमसंग टीवी प्लस ने सैमसंग स्मार्ट टीवी पर वायाकॉम18 के चार नये 'फास्ट' चैनल लॉन्च करने की घोषणा की

गुरुग्राम। सैमसंग टीवी प्लस, भारत में ब्रैंड की फ्री एड-सपोर्टेड स्ट्रीमिंग टीवी (फास्ट) सर्विस, ने चार नये फास्ट चैनल्स लॉन्च करने के लिए वायाकॉम18 के साथ साझेदारी की है। सैमसंग टीवी प्लस पर वायाकॉम18 के सुपरहिट बीट्स, कानफेड म्यूजिक, फुल्ली फालतू और कलर्स इनफिनिटी लाइट चैनलों को लॉन्च किया जाएगा। सैमसंग टीवी प्लस एक मुफ्त स्ट्रीमिंग सेवा है, जो सैमसंग स्मार्ट टीवी में पहले से इंस्टॉल है। यह चुनिंदा देशों में चैनलों न्यूज, स्पोर्ट्स, एंटरटेनमेन्ट, आदि विभिन्न चैनलों की पेशकश करता है। भारत में, सैमसंग टीवी प्लस दर्शकों के लिये 100 से ज्यादा लाइव टीवी चैनलों, हजारों फिल्मों तथा शोज भी लेकर आया है। यह लाइव और ऑन-डिमांड, दोनों होते हैं। सैमसंग टीवी प्लस इंडिया में पार्टनरशिप्स के हेड कुणाल मेहता ने कहा, ''हम सैमसंग टीवी प्लस प्लेटफॉर्म पर पार्टनर के तौर पर वायाकॉम18 का स्वागत करते हुए उत्साहित हैं। हम भारत में अपने दर्शकों के लिये विभिन्न तरह के कंटेन्ट के विकल्प लाने के लिये प्रतिबद्ध हैं। जो उनकी पसंद और कंटेंट देखने की आदत से मेल खाते हैं। इन नए चैनलों की मदद से, सैमसंग टीवी प्लस पर ना केवल मनोरंजन के विकल्प बढ़ेंगे बल्कि इससे अपने दर्शकों को शानदार वैरायटी और वैल्यू प्रदान करने के लिये हमारा समर्पण दिखेगा।'' वायाकॉम18 का जबर्दस्त कंटेन्ट दर्शकों को मनोरंजन का एक बेजोड़ अनुभव देगा। सुपरहिट बीट्स संगीत के शौकीनों का सबसे बढ़िया ठिकाना बनेगा, जहां पर नये-नये हिट्स और सदाबहार नगमे सुन सकते हैं।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा संभाग-रायपुर (छ.ग.)

ऑनलाईन प्रथम बार निविदा आमंत्रण सूचना क्रमांक- 419

क्रमांक 2525/निविदा/ग्रा.यां. सेवा/2024 रायपुर, दिनांक 21.11.2024

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल की ओर से एकीकृत पंजीयन प्रणाली के अंतर्गत (लोक निर्माण विभाग में) ''द'' एवं उच्च श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से प्रपत्र-''अ'' पर दर्शित सिविल कार्य हेतु प्रमुख अभियंता, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा द्वारा जारी दिनांक 01.11.2021 से प्रचलित प्रभावशील दर अनुसूची पर निविदा दर प्राप्त करने ऑनलाईन ई-निविदा दिनांक 06.12.2024 तक आमंत्रित की जाती है :-

स. क्र.	सिस्टम टेण्डर नंबर	कार्य का नाम	अनुमानित लागत राशि (रु. लाख में)	अमानत राशि	फार्म फीस
1	161524	Zonal Tender (Different Type of Civil Work i.e. but each work not exceeding cost of Rs. 25.00 lacs) at Sub division- Dharsiwa, Distt.- Raipur (C.G.) Zone-A	90.00	67500	3000
2	161527	Zonal Tender (Different Type of Civil Work i.e. but each work not exceeding cost of Rs. 25.00 lacs) at Sub division- Dharsiwa, Distt.- Raipur (C.G.) Zone-B	90.00	67500	3000

उपरोक्त कार्यों की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्ट http://eproc.cgstate.gov.in में दिनांक 21.11.2024 से देखी जा सकती है.

टीप :- मैन्युअल दस्तावेज की अंतिम तिथि 10.12.2024 सायं 5.30 बजे तक कार्यपालन अभियंता, ग्रा.यां. सेवा, संभाग रायपुर में पहुंचना अनिवार्य है.

G- 242504029/2

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, गुरुवार 28 नवम्बर 2024

राज्यपाल ने 'पहल : बहुमूल्य जीवन बचाने की' पुस्तक का किया विमोचन

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्यपाल श्री रमेन डेका ने आज राजभवन में पंडित जवाहर लाल नेहरू चिकित्सा महाविद्यालय रायपुर के निश्चेतना विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. प्रतिभा जैन शाह द्वारा लिखित 'पहलः बहुमूल्य जीवन बचाने की' पुस्तक का विमोचन किया। इस पुस्तक में आपातकालीन स्थिति में जीवन बचाने के लिए उपचारों के संबंध में जानकारी दी गई है। हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित इस पुस्तक को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए प्रयास करने को कहा।

रायपुर में बच्चों के लिए आयोजित राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता-2024

रायपुर (पीआईबी)। पावरग्रिड पॅश्चिम क्षेत्र-1 के रायपुर (कुम्हारी) उपकेंद्र में दिनांक 27.11.2024 को छतीसगढ राज्य के स्कूली बच्चों के लिए ऊर्जा संरक्षण विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के प्रथम चरण में करीब एक लाख बीस हजार स्कूली बच्चों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता के तीसरे और आखिरी चरण में राज्य के विभिन्न स्कूलों से एक सौ बच्चों ने हिस्स लिया जिसमें, ए वर्ग (कक्षा 5, 6 तथा 7 कक्षा) के 50 बच्चे तथा बी बी वर्ग (कक्षा 8, 9 तथा 10) 50 बच्चों ने हिस्सा लिया।

मंच पर आसीन- श्री रजनीश तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक, पावरग्रिड, पश्चिम क्षेत्र-1, नागपुर (मुख्य अतिथि)। श्री आर के शुक्ला, प्रबंधक निदेशक, सी एस पी टी सी एल, रायपुर। श्री रविंद्र कुमार, सहायक आयुक्त, केवीएस, आर ओ, रायपुर। श्री आर. एल. ठाकुर, संयुक्त निदेशक, दुर्ग, लोक शिक्षण निदेशालय, छतीसगढ़। श्री आर. के. दाश, वरि. महाप्रबंधक, पावरग्रिड, रायपुर। श्री एच. पी. पाल, महाप्रबंधक (मानव संसाधन), पावरग्रिड नागपुर तथा छत्तीसगढ़ राज्य के बिभिन्न जिलों से हमारे बीच उपस्थित प्यारे बच्चों एवं उनके माता- पिता, पावरग्रिड परिवार के सदस्यगण। पावरग्रिड प्रांगण में आयोजित राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता-2024 में शामिल हुए।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री रजनीश तिवारी जी का सम्बोधन इस प्रकार है- देश में ऊर्जा संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार, विद्युत मंत्रालय के अंतर्गत ऊर्जा दक्षता ब्यूरो / Bureau of Energy Efficiency द्वारा ऊर्जा संरक्षण अभियान के तहत प्रत्येक वर्ष देशभर में चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित किया जाता है।

देश का विकास प्राकृतिक संसाधनों तथा ऊर्जा की उप्लब्धता पर निर्भर करता है। अत- हम सभी नागरिकों का यह कर्त्तव्य है कि ऊर्जा के किसी भी रूप चाहे वो बिजली, पानी या ईंधन को अपनी आवश्यकता के अनुरूप ही प्रयोग करें तभी इस प्रकार के आयोजनों को सफलता मिलेगी। जितनी ऊर्जा हम बचाएंगे उतनी ऊर्जा हम देश के लिए उत्पन्न करेंगे।

प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में भूमिक अदा करने वाले सदस्य इस प्रकार है- श्री राज किशोर दाश, पावरग्रिड। डॉ. विकास चंद्र, सहायक प्राध्यापक, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़। सुश्री राधिका, पाठक - इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़। श्री करमन खट्टर, उप संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, छग। श्री. निहार रंजन साहू, परियोजना समन्वयक- क्रेडा, रायपुर। श्रीमती पिंकी सिंघ, टी जी टी (कला शिक्षा) केंद्रिय विद्यालय, बी एम वाई भिलाई।

बच्चे हमारे देश के भविष्य निर्माता हैं इनकी पवित्र कल्पनाओं को रंगों से भरकर ऊंची उडान भरने दीजिए। यही बच्चे आगे चलकर हमारे देश को विकसीत राष्ट्र बनाएंगे, यह हमारी शुभकामनाएं हैं।

कार्यक्रम के अंत में मंचासीन विशिष्ट अतिथियों द्वारा सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

छत्तीसगढ़ में पहली बार एमएमआई नारायणा अस्पताल में सचेत मरीज की सफलतापूर्वक ब्रेन ट्यूमर सर्जरी

रायपुर (विश्व परिवार)। एमएमआई नारायणा हेल्थ अस्पताल रायपुर ने छत्तीसगढ़ में पहली बार जागते हुए मरीज की क्रैनियोटोमी और न्यूरोमॉनिटरिंग तकनीक का उपयोग करते हुए ब्रेन ट्यूमर हटाने की सफलतापूर्वक सर्जरी कीगयी। यह उन्नत प्रक्रिया 25 वर्षीय मरीज के लिए नई उम्मीद लेकर आई और अस्पताल की चिकित्सा सेवाओं में उत्कृष्टता को दर्शाती है।

इस सर्जरी का नेतृत्व डॉ. घनश्याम ससापारधी ने किया, जो ब्रेन ट्यूमर सर्जरी में विशेषज्ञ हैं। मरीज को बार-बार दौरे पड़ रहे थे और मस्तिष्क के उस हिस्से में ट्यूमर पाया गया था जो बोलने और शरीर के दाहिने हिस्से की गतिविधियों को नियंत्रित करता है। ट्यूमर की संवेदनशील स्थिति को ध्यान में रखते हुए, डॉक्टरों ने जागते हुए क्रैनियोटोमी करने का निर्णय लिया। इस प्रक्रिया के दौरान, मरीज को स्थानीय एनेस्थीसिया देकर पूरी तरह चेतनामें रखा गया। ऑपरेशन के दौराडॉक्टर मरीज से बात करते रहे और को अपने शरीर के भागो में गतिविधि करने के लिए कहते रहे। जिससे वास्तविक समय में मरीज के मस्तिष्क की गतिविधियों में निगरानी करने में मदद मिलती है। न्यूरोमॉनिटरिंग तकनीक ने सर्जरी को अत्यधिक सटीक और सुरक्षित बनाया, जिससे स्वस्थ मस्तिष्क संरचना को किसी भी क्षति से बचाया जा सका। इस तकनीक से मरीज को लखवा होने का खतरा नहीं रहता है एवं मरीज का मनोबल बना रहता है और रिकवरी भी जल्दी होती है ब्रेन ट्यूमर की इस एडवांस तकनीक से राज्य के मरीजों को हैदराबाद, मुंबई जैसे बड़े शहरो में जाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

डॉ. घनश्याम ससापारधी ने इस उपलब्धि पर कहा कि हमें गर्व है कि हम अपने मरीजों को बिना बेहोश किये क्रैनियोटोमी सर्जरी की गयी हैं। यह तकनीक हमें ट्यूमर को पूरी तरह हटाने में मदद करती है और मस्तिष्क के महत्वपूर्ण कार्य, जैसे बोलना, याददाश्त और गतिविधियों को सुरक्षित रखने का अवसर देती है।

सर्जरी के बाद, मरीज की स्थितिमें तेजी से सुधार आया और सर्जरी के तीसरे दिन अस्पताल से स्वस्थ होकर छुट्टी ले ली। इस सफलता में डॉ. एच.पी. सिन्हा (न्यूरोलॉजिस्ट) और टीम, डॉ. राकेश चंद, डॉ. धर्मेश कुमार लाड (एनेस्थीसियोलॉजिस्ट) और टीम, और डॉ. प्रदीप शर्मा (क्रिटिकल केयर विशेषज्ञ) और टीम की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

एमएमआई नारायणा हेल्थ अस्पताल रायपुर के फैसिलिटी डायरेक्टर, श्री अजित बेलमकोंडा ने कहा कि यह सर्जरी हमारी मेडिकल टीम की उत्कृष्टता और उनकी कड़ी मेहनत का परिणाम है। हमारा लक्ष्य नवीनतम तकनीक और सहानुभूतिपूर्ण देखभाल के साथ मरीजों को सर्वोत्तम चिकित्सा सेवाएं प्रदान करना है। इस ऐतिहासिक सर्जरी के साथ, एमएमआई नारायणा हेल्थ अस्पताल रायपुर ने मरीज-केंद्रित और उन्नत चिकित्सा सेवाओं के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत किया है। अस्पताल आधुनिक तकनीक और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से चिकित्सा क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छू रहा है, जिससे मरीजों को जीवन में नई उम्मीदें मिल रही हैं।

NSUI ने सेमेस्टर परीक्षा फॉर्म भरने में तकनीकी समस्याओं के कारण विलंब शुल्क माफ करने की मांग की

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर जिला NSUI के प्रतिनिधिमंडल ने पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलसचिव को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में छात्रों को सेमेस्टर परीक्षा के ऑनलाइन फॉर्म भरने में हो रही तकनीकी समस्याओं के कारण विलंब शुल्क माफ करने की मांग की गई।

NSUI का कहना है कि विश्वविद्यालय के ऑनलाइन पोर्टल में बार-बार आ रही तकनीकी खामियों की वजह से कई छात्र समय पर फॉर्म नहीं भर सके। इसके चलते छात्रों को अनावश्यक रूप से विलंब शुल्क का सामना करना पड़ रहा है। हस्ड्ढ ने विश्वविद्यालय प्रशासन से आग्रह किया कि तकनीकी समस्याओं को देखते हुए विलंब शुल्क को तत्काल प्रभाव से माफ किया जाए। NSUI जिला उपाध्यक्ष तारिक अनवर खान ने कहा कि यह छात्रों की गलती नहीं है कि पोर्टल सही ढंग से काम नहीं कर रहा। विश्वविद्यालय को इस समस्या की जिम्मेदारी लेते हुए छात्रों को राहत प्रदान करनी चाहिए। उन्होंने यह भी मांग की कि भविष्य में ऐसी समस्याओं को रोकने के लिए ऑनलाइन प्रणाली को अधिक सुदृढ़ और सुगम बनाया जाए। उन्होंने जोर देकर कहा कि यदि उनकी मांगों पर शीघ्र निर्णय नहीं लिया गया, तो वे आंदोलन करने के लिए बाध्य होंगे।

शंकर नगर वार्ड-30 : विधायक निधि से स्वीकृत हुए 10 लाख के कार्यों का हुआ भूमिपूजन

यादवपारा, सिंचाई पारा में बनेगा भवन

रायपुर (विश्व परिवार)। शंकर नगर वार्ड 30 में यादवपार एवं सिंचाई पारा क्षेत्र में दो भवन निर्माण कार्य का भूमिपूजन संपन्न हुआ, शीघ्र ही यादव पारा एवं सिंचाई पारा के रहवासियों का इसका लाभ मिलेगा।इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप के विधायक श्री पुरन्दर मिश्रा जी उपस्तिथ हुए पार्षद सुमन राम प्रजापति एवं नागरिको ने विधायक जी के प्रति इस महत्वपूर्ण कार्य की स्वीकृति हेतु आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर मुख्य रूप से भाजपा जिला कार्य समिति सदस्य टिकेंद्र वर्मा जी, मंडल उपाध्यक्ष राम दास मानिकपूरी जी, पुर्व मंडल महामंत्री मधुसूदन शर्मा जी, भाजपा नेता संजय सोलंकी जी, युवा मोर्चा उपाध्यक्ष राम तांडी जी, महेन्द्र धनकर जी, शम्भू लौवंशी जी, आशु अग्रवाल जी, संतोष यादव जी, भारती यादव जी उपस्तिथ हुए। मातृ शक्ति रेखा सोनी जी, प्राची सोना जी, मनीषा यादव जी, तेज बाई यादव जी, रोना यादव जी, देन्दु यादव जी, सरोज बाग जी, शांति बाग जी, बुच्ची अन्ना जी, शांति यादव जी, लता जी, हरि प्रिया जी, सवितायादवजी, अहिल्यायादव जी, शांतियादव जी, सुमि।

ग्रीन एनर्जी हेतु एन.टी.पी.सी. व छत्तीसगढ़ राज्य बिजली उत्पादन कम्पनी में करार

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने इसे नये युग की शुरूआत बताया

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज के डंगनिया, रायपुर स्थित मुख्यालय में छत्तीसगढ़ राज्य बिजली उत्पादन कंपनी तथा एन.टी.पी.सी. की सहायक कंपनी मेसर्स एन.टी.पी.सी. ग्रीन एनर्जी लिमिटेड के बीच एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित किया गया जिसके अनुसार ये दोनों कंपनियां मिलकर एक संयुक्त उपक्रम कंपनी बनाएंगी। संयुक्त उपक्रम कंपनी के माध्यम से राज्य में लगभग 2 गीगावॉट (2 हजार मेगावॉट) क्षमता की सौर ऊर्जा परियोजनाओं के विकास का काम करेंगी। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने इस करार को छत्तीसगढ़ में नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में एक नये युग की शुरूआत बताया। प्रदेश के ऊर्जा सचिव तथा छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज के अध्यक्ष डॉ. रोहित यादव ने कहा कि हम नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में बहुत गंभीरता से काम करते हुए एक नया इतिहास रचेंगे।

छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत उत्पादन कंपनी लिमिटेड तथा नेशनल थर्मल पॉवर कंपनी के पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी मेसर्स एन.टी.पी.सी. ग्रीन एनर्जी लिमिटेड (एन.जी.ई.एल.) के बीच छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज के प्रबंध निदेशक श्री एस.के. कटियार तथा एन.टी.पी.सी. के रीजनल एक्जिक्यूटिव डायरेक्टर श्री पी.के. मिश्रा की उपस्थिति में एम.ओ.यू पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौता ज्ञापन में एन.जी.ई.एल. की ओर से महाप्रबंधक (अभियांत्रिकी) श्री धीरेंद्र जोशी और सी.एस.पी.जी.सी.एल. की ओर से मुख्य अभियंता (कार्पोरेट प्लानिंग एण्ड बिजनेस डेवलेपमेंट) श्री गिरीश गुप्ता द्वारा हस्ताक्षर किया गया। ज्वाइंट वेंचर कंपनी के माध्यम से नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं का संपादन किया जाएगा। यह समझौता ज्ञापन, राज्य के नवीकरणीय ऊर्जा दायित्वों (आर.जी.ओ.) के पालन में सहायक सिद्ध होगा तथा जिसके द्वारा हरित ऊर्जा स्त्रोतों से ऊर्जा की उपलब्धता सुनिश्चित होगी। इस करार से राज्य में हरित ऊर्जा स्त्रोतों से बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसरों का सृजन होगा, जिससे कि राज्य की भावी विद्युत आवश्यकताओं के साथ ही राज्य के समग्र विकास और सुदृढ़ अर्थव्यवस्था बनाने में सहयोग मिलेगा।

इस अवसर पर छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर जनरेशन कंपनी के ईडी सीएल नेताम, एमआर बागड़े, संदीप मोदी, मुख्य अभियंतागण जेएस बोंडे, रजनीश जांगड़े, एमएस कंवर, रोहित डहरवाल, संजय शुक्ला, मनीष गुप्ता, अतिरिक्त महाप्रबंधक (जनसंपर्क) उमेश कुमार मिश्र, विभागीय अभियंता अतनु मुखोपाध्याय, आशुतोष शुक्ला, नीरज वर्मा सहित एनटीपीसी के वरिष्ठ अधिकारीगण भी उपस्थित थे।

श्रद्धा महिला मण्डल के आनंद मेला 2024 में दिखी मिनी इंडिया की झलक

स्वावलंबन योजना के तहत 10 ई-रिक्शा एवं 6 मोटराइज्ड ट्राइसाइकिल दिए गए

मण्डल अध्यक्षा पूनम मिश्रा ने कहा- समाज पीछे छूट गए हैं हमें मिलकर उन्हें आगे लाना है

बिलासपुर (विश्व परिवार)। श्रद्धा महिला मण्डल द्वारा एसईसीएल वसंत विहार स्थित खेल मैदान में आयोजित दो दिवसीय आनंद मेला का आज सांस्कृतिक कार्यक्रम पश्चात समापन किया गया। समापन समारोह में श्रद्धा महिला मण्डल अध्यक्षा पूनम मिश्रा एवं एसईसीएल सीएमडी डॉ प्रेम सागर मिश्रा उपस्थित रहे। साथ ही मण्डल उपाध्यक्षा संगीता कापरी, सदस्यागण अनीता फ्रैंकलिन, इप्सिता दास, हसीना कुमार, वनीता जैन एवं एसईसीएल निदेशक मण्डल से एसएन कापरी, बिरंची दास, डी सुनील कुमार एवं सीवीओ हिमांशु जैन उपस्थित रहे।

श्रद्धा महिला मण्डल द्वारा आयोजित दो दिवसीय आनंद मेले में शहर भर से लोगों का हूजूम देखा गया। इस अवसर पर श्रद्धा महिला मण्डल अध्यक्षा श्रीमती पूनम मिश्रा ने कहा कि श्रद्धा महिला मण्डल, एसईसीएल बिलासपुर एवम क्षेत्रीय समितियों के समस्त पदाधिकारियों एवं सदस्याओं के अथक प्रयासों से इस मेले में हमारे 13 कोयला क्षेत्रों में कार्यरत महिला समितियों की बहनों ने स्टाल लगाया। उन्होने कहा यह मंच न सिर्फ पूरे एसईसीएल परिवार को एक साथ लाता है बल्कि समाज के पिछड़ों एवं वंचितों को आगे लाने का एक सशक्त माध्यम भी है।

आनंद मेले में श्रद्धा महिला मंडल एसईसीएल बिलासपुर सहित एसईसीएल के विभिन्न संचालन क्षेत्रों की महिला समितियों द्वारा लगाए गए भारत के विभिन्न राज्यों की थीम पर आधारित स्टालों ने एक मिनी भारत की छवि प्रस्तुत की।

मेले के पहले दिन श्रद्धा महिला मण्डल अध्यक्षा पूनम मिश्रा एवं सदस्यों द्वारा महिला सशक्तीकरण एवं दिव्यांग कल्याण के लिए स्वावलंबन योजना के तहत 10 ई-रिक्शा एवं 6 मोटराइज्ड ट्राइसाइकिल हितग्राहियों को दिए गए। ई-रिक्शा पाने वाली हितग्राहियों में 9 महिलाएं शामिल रहीं। ई-रिक्शा एवं ट्राईसाइकिल पाकर हितग्राही बेहद खुश नज़र आए एवं उन्होने कहा कि ई-रिक्शा एवं ट्राइसाइकिल प्रदान करने के लिए हम श्रद्धा महिला मंडल अध्यक्षा पूनम मिश्रा के बहुत-बहुत आभारी हैं।

अर्जुन दास वासवानी को उनके जन्मदिन पर अखिलेश सिंह राजपूत एवं हरीशंकर सोनी ने दी बधाई एवं शुभकामनाएं

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ सिंधी अकादमी (छ.ग. शासन संस्कृति विभाग) के पूर्व डायरेक्टर वरिष्ठ कांग्रेस नेता एवं समाजसेवी अर्जुन दास वासवानी को उनके जन्मदिन पर सुबह से ही बधाई देने वालों का तांता लगा हुआ है।

इसी क्रम में उनकों बधाई देते हुए राजधानी रायपुर के कुशल व्यवसायी अखिलेश सिंह राजपूत एवं दैनिक विश्व परिवार की ओर से हरीशंकर सोनी (विज्ञापन प्रबंधक रायपुर) ने उनके जन्मदिन पर बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए उनके दीर्घायु जीवन की कामना की।

ॐ शांति – श्री महावीराय नमः – ॐ शांति

असाता कर्म के उदय से हमारे परिवार के पूज्य राजमल जी पांड्या का स्वर्गवास होगया है।
जिनका **शांति विधान** दिनांक 28.11.2024 वार गुरुवार
श्री दिगंबर जैन मंदिर, वैशाली नगर में **सुबह 7:00 बजे** से एवं
उठावना और पगड़ी का दस्तूर सुबह 11:00 बजे
से श्री खंडेलवाल जैन भवन, वैशाली नगर, भिलाई में रखा गया है।

———श्रद्धावनत———
ताराचंद, प्रकाश चंद, संतोष कुमार, सतीश कुमार, श्रीपाल,
सुरेश कुमार, सुनील कुमार, विनोद कुमार
और समस्त पांड्या परिवार ।।

दूसरी केन्द्रीय भारत रायन इंटरनेशनल स्कूल फुटसल चैंपियनशीप 2024-25

रायपुर (विश्व परिवार)। रायन इंटरनेशनल स्कूल में दो दिवसीय फुटसल चैंपियनशीप का आगाज दिनांक 25.11.2024 को किया गया। इस क्षेत्रीय फुटसल चैंपियनशीप प्रतिस्पर्धा में 12 संभाग के स्कूलो ने सहभागिता करी। जिसमें गोंदिया, नागपुर, इंदौर, भोपाल, रायपुर, धमतरी, दुर्ग और जबलपुर के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। शाला संस्थापक डॉ. ए. एफ. पिंटो के विजन (खेल) कौशल को बढावा देने के लिए इस प्रतियोगिता का नेतृत्व रायन इंटरनेशनल स्कूल रायपुर के द्वारा किया गया। इस चैंपियनशीप का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में खेल के प्रति जागृति लाना, खेलों मे उनके रूझान और कौशल को बढ़ावा देना है।

कार्यक्रम की शुरूआत प्रभु की प्रार्थना से की गई। तत्पश्चात बाईबिल पठन, विशेष प्रार्थना एवं प्रभु की स्तुति में गीत गाए गए। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री सिद्धार्थ कश्यप (डीआईजीपी अधिकारी, सीआरपीएफ) उपस्थित रहे जिनके सम्मान में स्वागत भाषण एवं स्वागत गीत गाए गए। रायन शाला की परंपरा के अनुसार नन्हा पौधा और प्रतीक चिन्ह प्रदान किया गया। फुटसल चैंपियनशीप के आरंभ में सर्वप्रथम ध्वजारोहण की प्रक्रिया पूर्ण की गई। तदुपरांत मार्च पास्ट एवं शपथ ग्रहण सभी विद्यार्थियों द्वारा किया गया। रंगबिरंगे गुब्बारे व शुभंकर के साथ इस चैंपियनशीप का आगाज किया गया। सभी विद्यार्थी इस अवसर पर बहुत ही उत्साहित और जोश से भरे नजर आ रहे थे। ऐसा लग रहा था कि सभी फुटसल चैंपियनशीप के खिलाडी उस अवार्ड को अपने नाम दर्ज कराना चाहते हो। पहले दिन में 22 मैच खेले गए। जिसमें क्षेत्रीय शाला के सभी खिलाडियों ने अपना सवश्रेष्ठ प्रदर्शन दिखाया। कार्यक्रम के समापन में श्री विजय खंडेलवाल (जिला शिक्षा अधिकारी, रायपुर) विशेष रूप से मौजूद रहे। जिनका नन्हा पौधा और स्वागत भाषण देकर सम्मान किया गया। डॉ. ए. एफ. पिंटो सर के विजन (स्पोर्टस) को पूरा करने के लिए फुटसल चैंपियनशीप का आयोजन एक सराहनीय कदम है। विद्यार्थियों को खेल के प्रति जागरूक बनाने व उनकी रूचि को बढावा देने में इस प्रकार की चैंपियनशीप प्रतिस्पर्धा एक अनोखी पहल है। सभी 12 स्कूलों के बीच मैच बहुत ही रोमांचकारी रूप से पूर्ण हुआ। इस वर्ष की फुटसल चैंपियनशीप की विजेता-रायन इंटरनेशनल स्कूल, इंदौर, द्वितीय स्थान -सेंट जेवियर्स हाई स्कूल, रायपुर तथा तृतीय स्थान पर रायन इंटरनेशनल स्कूल, रायपुर रहा। डॉ. ए.एफ. पिंटो एवं निर्देशिका मैडम ग्रेस पिंटो ने सभी विद्यार्थियों को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की।

कालड़ा बर्न एवं प्लास्टिक कॉस्मेटिक सर्जरी सेंटर

होंठों को पतला - मोटा करें और आकर्षक बनायें.
इंजेक्शन व लेसर द्वारा
छ.ग.शासन से मान्यता प्राप्त
आर.के.सी.के सामने, चौबे कालोनी एवं पचपेड़ी नाका, धमतरी रोड कलर्स मॉल के पास, रायपुर
कॉल : 9827143060/8871003060
Ajay Advt.

लोन लेने के लिए ITR बनवायें मात्र 500/- में
शेखर गुप्ता ONLYTDS.COM
ITR GST
हमारे TAX Expert आपकी मदद हेतु तैयार है।
G.S.T. रिटर्न Food Licence
इन्कम TAX फाईल M.S.M.E. रजिस्ट्रेशन
TDS रिफंड प्रोजेक्ट रिपोर्ट
IT नोटिस डिजिटल सिग्नेचर
9300755544, 8878655544

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354